SACHCHA RAHI

• ISSN 2582-4007 • VOL 25 • ISSUE 06 • AUGUST 2026

हिन्दी मासिक अगस्त 2026

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

मुसलमान : स्वतंत्रता संग्राम के मार्ग दर्शक और लीडर

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की भागीदारी स्वाभाविक रूप में बहुत प्रमुख और विशिष्ट रही है, उसकी वजह ये थी कि अंग्रेज़ों ने जब हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा करना शुरु किया और एक एक प्रदेश और राज्य उनके अधीन होने लगा, उस समय मुसलमान ही देश के शासक थे, सबसे पहला व्यक्ति जिसको इस खतरे का एहसास हुआ वह मैसूर का साहसी और स्वाभिमानी शासक फ़तेह अली खाँ टीपू सुल्तान था।

(हज़रत मौलाना सै 0 अबुल हसन अली नदवी रह 0)

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
समय: (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अगस्त 2026 वर्ष 25 अंक 06

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
एक यादगार शख़्सियत

हिंदुस्तान को आज़ाद कराने में जिन लोगों ने अपना तन–मन और धन निछावर कर दिया था, उनमें एक बड़ा नाम मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का है। उनकी पूरी ज़िंदगी का मिशन था कि हमारा देश अंग्रेज़ो की गुलामी से आज़ाद हो, वह मुसलमानों को आज़ादी की क्रांति में किसी से पीछे देखना नहीं चाहते थे और इसी लिए 1912 में अल हिलाल पत्रिका जारी किया, जिसने मुल्क व क़ौम में आज़ादी का जज़्बा जगाया और गुलामी की जंजीरों को काट डालने का हौसला अता किया।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
15 अगस्त एक ऐतिहासिक	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	12
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	13
स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज	मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	14
जंगे आज़ादी के चन्द गुमनाम सिपाही	डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	18
इतिहास गवाह है	इं0 जावेद इक़बाल	21
सीरते रसूलुल्लाह सल्ल0	मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी	23
जंगे आज़ादी में मुस्लिम हुकमा	सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी	26
आज़ादी का जश्न और मुसलमान	मुहम्मद इक़बाल नदवी	29
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	31
अमन और शांति के पैग़म्बर	मौलाना मोहम्मद शोएब नदवी	32
मुजाहिद–ए–आज़ादी बतख मियाँ	आलिया खातून	34
इसराइल द्वारा जारी नरसंहार	नौशाद खान नदवी	36
हज़रत आदम अलैहिस्सलाम	अब्दुल कवी फ़ारूक़ी	38
स्वास्थ्य जीवन का इस्लामी दृष्टिकोण	मुहम्मद जुबैर अहमद नदवी	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-कहफ़:-

अनुवादः—

निश्चित रूप से जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये तो जो अच्छा काम करे उसके बदले को हम बिल्कुल बर्बाद नहीं करते(30) ऐसों ही के लिए हमेशा की जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ उनको सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे हरे पतले और मोटे रेशम के कपड़े पहने, मसहरियों पर टेक लगाए वहाँ बैठे होंगे, क्या खूब बदला है और कैसी सुन्दर आराम की जगह है(31) और आप उनके सामने उन दो आदमियों का उदाहरण पेश कीजिए जिनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग दिये और उन दोनों को खजूर के पेड़ों से घेर दिया और दोनों के बीच खेती रखी(32) दोनों बाग अपने फल देते और उनमें जरा भी कमी न होती और दोनों के बीच से हमने नहर निकाल दी(33) और उसको फल मिला तो वह बात करते हुए अपने साथी से कहने लगा कि मैं माल में भी तुम से अधिक हूँ और जत्थे में भी तुम से अधिक मजबूत हूँ(34) और वह अपने बाग में गया और वह अपनी जान पर अत्याचार कर रहा था बोला कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद भी होगा(35) और मैं नहीं समझता कि क़यामत आएगी और अगर मैं अपने पालनहार के पास लौटाया गया तो भी वापस होने पर मुझे इससे बेहतर ही जगह मिलेगी(36) उसके साथी ने उससे बात के दौरान कहा क्या तुम उस जात का इनकार करते हो जिसने तुमको मिट्टी से फिर पानी की बूंद से बनाया फिर एक आदमी बना कर खड़ा कर दिया(37) लेकिन (मैं तो यही कहूँगा) कि वह अल्लाह ही मेरा पालनहार है और मैं अपने पालनहार के साथ किसी को साझी नहीं मानता[1](38) और क्यों न जब तुमने अपने बाग में प्रवेश किया और मुझे तुमने धन व संतान में अपने से कमजोर देखा तो तुम यह कहते कि जो अल्लाह ने चाहा (वह हुआ) ताकत सब अल्लाह ही के कब्जे में है(39) तो अब हो सकता है कि मेरा पालनहार तुम से बेहतर बाग मुझे प्रदान कर दे और उस पर आसमान से कोई आफत भेज दे तो वह चटियल मैदान होकर रह जाए(40) या उसका पानी भीतर तहों में चला जाए तो तुम उसको तलाश भी न कर सको(41) और (यही हुआ) उसके फल (आफत के) घेरे में आ गए बस उसने जो कुछ उसमें खर्च किया था उस पर हाथ मलता रह गया और वे सब अपनी टट्टियों के बल गिरे पड़े थे और वह कह रहा था काश कि मैंने अपने पालनहार के साथ किसी को शरीक न किया होता[2](42) और न उसका कोई जत्था हुआ जो अल्लाह के सिवा उसकी सहायता करता और न ही वह खुद बदला ले सका(43) यहाँ (यह बात खुल गई कि) सब अधिकार अल्लाह ही का है, जो सत्य है, वही बेहतर पुरस्कार देने वाला और वही बेहतर बदला देने वाला है(44) और उनके सामने सांसारिक जीवन का उदाहरण पेश कीजिए, जैसे पानी हो जो हमने ऊपर से उतारा हो बस

उससे ज़मीन की उपज खूब घनी हो फिर वह भूसा भूसा हो जाए, हवाएं उसको उड़ाती फिरें और अल्लाह तो हर चीज पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[3](45) धन और बेटे सांसारिक जीवन की शोभा हैं और बाकी रहने वाले सत्कर्म आपके पालनहार के नजदीक बदले के एतबार से अधिक बेहतर और आशा के एतबार से भी अधिक उत्तम हैं[4](46) और जिस दिन हम पहाड़ों को सरका देंगे और आप धरती को देखेंगे कि खुली पड़ी है और हम सब को एकत्र करेंगे और उनमें से एक को भी नहीं छोड़ेंगे[5](47)।

तफ़सीर (व्याख्या):–

1. ऊपर एक ओर कुरैश के सरदारों और दूसरी ओर निर्धन दुर्दशा वाले मुख़्लिस (निष्ठावान) ईमान वालों का वर्णन था, फिर ईमान व कुफ़्र (इनकार) के दो अलग–अलग रास्तों का बयान और उनके परिणाम का उल्लेख था, अब उसका उदाहरण पेश किया जा रहा है और विशेष रूप से चेतावनी दी जा रही है कि दुनिया का सम्मान व शक्ति सफलता का प्रमाण नहीं है, यह एक धोखा है जिसमें आदमी ग्रस्त होकर आखरित को भुला देता है, सफलता की कुंजी ईमान है जो वास्तविक सफलता की गारंटी है, काफ़िर को अपने बाग पर गर्व था, वह समझता था कि जब उसको सब कुछ मिला हुआ है तो यही उसकी सफलता है, वह यह नहीं मानता था कि यह एक परीक्षा है कि वह अपने मालिक को पहचानता है या उसको भुला देता है ? इसीलिए ईमान वाले गरीब साथी ने उसको उदाहरण से समझाया कि अपनी वास्तविकता न भूलो तुम को अल्लाह ने क्या से क्या बना दिया, मैं तो उसी एक जात को मानता हूँ और उसके एक होने में विश्वास रखता हूँ।

2. धन अल्लाह की नेमत है लेकिन अकड़ने और कुफ़्र बकने से आफत आती है, चाहिए था कि बाग में प्रवेश करते समय ''माशा अल्लाहु लाकुव त इल्ला बिल्लाह'' कहता, हदीसों में है कि आदमी को जब अपने घर में खुशहाली नज़र आये तो यही शब्द कहे।

3. यह दुनिया की अस्थाई बहार का उदाहरण दिया गया है जैसे ही सूखी जमीन पर पानी पड़ा वह हरी–भरी हो गई और लहलहाने लगी, आँखों को भली लगने लगी मगर कुछ ही दिन गुज़रे कि पीली पड़ने लगी, अंततः काट–छाँट कर बराबर कर दी गई।

4. मरने के बाद धन–संतान काम नहीं आते केवल नेकियाँ काम आती हैं, ''अल बाक़िया तुस्सॉलिहात'' में हर वह कार्य या कथन आता है जो अल्लाह की मुहब्बत या पहचान या आज्ञा पालन की ओर ले जाने वाला हो, अतः इसी धन और संतान को अगर अल्लाह की धरोहर समझ कर अल्लाह की इबादत और धर्म प्रायणता का साधन बना लिया जाए तो इनकी गिनती भी ''अल्बाक़ियातुस्सालिहात'' अर्थात हमेशा बाकी रहने वाले नेक आमाल में होने लगती है।

5. हश्र का चित्रण है, जब पहाड़, नदियाँ, टीले सब समाप्त हो चुके होंगे और सारे इनसान हश्र के मैदान में लाकर एकत्र किये जाएंगे, आयतों से मालूम होता है कि पहले पहाड़ सरकाए जाएंगे फिर उनको भूसा बना कर उड़ा दिया जाएगा।।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

कुछ खास दुआओं का बयान

सोने के वक्त की दुआः—

हजरत हुजैफः और हजरत अबूजर रजि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब रात को आराम फरमाने के लिए बिछौने पर लेटते तो यह दुआ पढ़ते— "अल्लाहुम्म बिस्मि क अमूतु व अहया" (ऐ अल्लाह! तेरे ही नाम पर मुझको जीना है और तेरे ही नाम पर मुझको मरना है)। और जब सो कर उठते तो पढ़ते "अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी अहयाना बअ्द मा अमा तना व इलैहिन्नुशूर" (हर तरह की तारीफें और प्रशंसायें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मौत देने के बाद हमको जिलाया और आखिर में तो हमें उसी के पास जाना है)। (बुखारी)

सोहबत (संभोग) के वक्त की दुआः—

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल0 से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल0 ने फरमाया— जब तुम में से कोई अपनी बीवी के पास जाए तो कहे "अल्लाहुम्म जन्निबनश्शैतान व जन्निबिश्शैतान मिम्मा रजक्तना (ऐ अल्लाह! हमको शैतान से बचा, और जो औलाद और संतान हमारे नसीब में दे (लड़का / लड़की) उसको भी तू शैतान से बचा)। अब जो भी औलाद होगी उसको कोई नुकसान नहीं होगा। (बुखारी व मुस्लिम)

सुबह के समय की दुआः—

हजरत अबू हुरैरः रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब सुबह होती थी तो कहते थे "अल्लाहुम्म बि क अस्बहना व बि क अम्सैना, व बिक नहया व बिक नमूतु व इलैकन्नुशूर" (ऐ अल्लाह तेरी कुदरत (महिमा) से हम ने सुबह की और तेरी ही कुदरत से हमने शाम गुजारी, और तेरी ही कुदरत से हम जिंदा रहे और तेरी ही कुदरत से हम मरते हैं और तेरे पास ही हमें जाना है)। (बुखारी)

इस्तिन्जा (शौच आदि) के समय की दुआः—

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब कजाए हाजत (शौच आदि) के लिए जाते तो कहते "अल्लाहुम्म इन्नी अऊजू बि क मिनल खुबुसि वल् खबाइसि" (ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ खबीस जिन्नों से मर्द हों या औरत)। (बुखारी)

खाना खाने के बाद की दुआः—

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब दस्तरखान (जिस कपड़े या प्लास्टिक आदि को फैलाकर खाना रखा जाता है) उठाते तो फरमाते "अल्हुम्दुलिल्लहि हम्दन कसीरन तैय्यिबन मुबारकन फीहि गैर मक्फिय्यिन वला मुवद्दयिन वला मुस्तगनन् अन्हु रब्बना" (सब तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं, ऐसी तारीफ़ जिसकी कोई हद नहीं, ऐसी तारीफ जो पाक और पवित्र है दिखावे से, ऐ हमारे रब, हम इस खाने को काफी समझ कर या बिल्कुल रुख़सत करके या इससे गैर मुहताज हो कर नहीं उठा रहे हैं)। (बुखारी)

कपड़ा पहनने की दुआः—

हज़रत अबू सईद खुद्री रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 जब नया कपड़ा पहनते तो उस कपड़े का नाम लेकर कहते थे चाहे वह पगड़ी हो या कुर्ता या चादर "अल्लाहुम्म लकल्हम्दू अन्त कसौतनीहि, अस्अलुक खैरहू व खैर मा सुनिअ लहू, व अऊजु बि क मिन् शर्रिही व शर्रि मा सुनि अ लहू" (ऐ अल्लाह तेरी ही तारीफ (प्रशंसा) है, तूने मुझे यह कपड़ा पहनाया, तुझ से मैं इसकी भलाई चाहता हूँ और उसकी भी जिसके लिए इसको बनाया गया है और इसकी बुराई से पनाह चाहता हूँ और उस चीज़ की बुराई से भी जिसके लिए यह बनाया गया है। (अबूदाऊद व तिर्मिजी)◆◇◆

15 अगस्त एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण दिन

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इसी तारीख़ को 1947 ई0 में हम भारत वासियों ने प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया था, ब्रिटिस साम्राज्य के अन्तिम वाएसराय लार्ड माउन्ट बेटन ने लाल किले की फ़सील (प्राचीर) पर भारत का तिरंगा लहराया था ये ऐतिहासिक दिन स्वतंत्रता संग्राम के लंबे संघर्ष के बाद देखने को मिला था, आज की नई पीढ़ी सोच नहीं सकती कि हमारे पूर्वजों ने इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए कितना वलिदान और कितनी कुरबानी दी और कितना अपना ख़ून बहाया।

स्वतंत्रता आन्दोलन में देशवासियों को जो कठोर यातनाएं दी गईं उनको सुन कर बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, अंग्रेज़ों के यहां सबसे बड़ी बर्बरता वाली सज़ा ये थी कि वह हिन्दुस्तानियों को तोप के मुँहाने पर बाँध कर गोला दाग देते थे जिससे उनके शरीर के चिथड़े उड़ जाते थे, 1857 ई0 में उर्दू के प्रसिद्ध पत्रकार मोलवी बाक़िर को यही सज़ा दी गई थी। अंग्रेज़ों ने स्वतंत्रता सेनानियों के लिए ''काला पानी'' की सज़ा रखी थी ये सज़ा बहुत ही कष्ट दायक और भयंकर थी वहां की जलवायु, खाना पानी, रहन–सहन 24 घण्टे कष्ट ही कष्ट था, ''काला पानी'' केवल दो शब्द हैं, परन्तु इसका वर्णन एक दर्दभरी दास्तान है। संक्षेप में इसको क़ैदियों की कालोनी कहिये, समुद्र का पानी देखने में काला होतो है इसी लिए उसका नाम काला पानी पड़ा, वास्तव में ये हिन्द महासागर के टापुओं का समूह है जो भारत के मानचित्र में अन्डमान निकोबार के नाम से जाना जाता है इसी नाम से ये टापू प्रसिद्ध है। इस समय स्वतंत्रत भारत का अंग है और केन्द सरकार के अधीन है।

1857 ई0 के स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में बड़ी संख्या में भारतवासियों को फाँसी दी गई, गोली मारी गई और जिन क़ैदियों को कारावास में रखना उचित नहीं था उनको शारीरिक परिश्रम के साथ काले पानी की सज़ा दी गई थी, स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम उलमा ने बहुत बढ़ चढ़ कर भाग लिया जिसके परिणाम में उनको बड़ी यातनाएं दी गईं उनकी एक लंबी सूची है, उस सूची का उल्लेख यहां संभव नहीं है, यहां कुछ उलमा के नाम दिए जा रहे हैं जिनको ''काले पानी'' की सज़ा दी गई थी, संयोगवश वह उत्तर प्रदेश के उलमा हैं जो देश के प्रसिद्ध उलमा हैंः मौलाना फ़जले हक़ खैराबादी, मुफ़्ती इनायत अहमद काकोरवी, मुफ़्ती मज़हर करीम दरयाबादी, मौलाना लियाक़त अली इलाहाबादी, मौलाना वहाजुद्दीन मुरादाबादी, मौलाना फजले रसूल बदायूनी, हाफिज़ रहमतुल्लाह कैरानवी आदि, मौलाना फ़जले हक़ ख़ैराबादी का वहीं "अण्डमान'' में देहान्त हो गया था वहीं दफना दिये गये, बाकी लोग लंबे समय के बाद वतन वापस आए, बृद्ध अवस्था में भी उनको घर वालों और रिश्तेदारों से दूर रखा गया, आज हमने उनकी कुरबानियों और बलिदानों को भुला दिया है।

यह स्वतंत्रता संग्राम वास्तव में जन आंदोलन और राष्ट्रव्यापी था, हिन्दू मुस्लिम सब उसमें सम्मिलित थे सब एक दूसरे से कन्धे से कन्धा मिला कर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे थे, पारस्परिक मेल मिलाप की

वजह से एकता और प्रेम का माहौल था, देश की सुरक्षा और स्वतंत्रता पाने के लिए सब एक साथ आगे बढ़ रहे थे, लोगों में एक उमंग और साहस था।

उत्साह और उल्लास का ऐसा माहौल कभी ज़माने ने देखा न था जैसा कि उस समय देखने में आया, नेतृत्व और पथप्रदर्शन में मुसलमानों का पलड़ा भारी रहा, अधिकतर नेता मुसलमान ही थे, अज़ीमुल्लाह खाँ, जनरल बख्तावर खाँन, बहादुर खाँ, मौलाना अहमदुल्लाह शाह फ़ैज़ाबादी, मौलाना लियाक़त अली इलाहाबादी, बेगम हज़रत महल आगे–आगे थे, उनमें मौलाना अहमदुल्लाह शाह उच्च कोटि के इन्सान थे, होम्ज़ लिखता हैः– मोलवी अहमदुल्लाह शाह उत्तरी भारत में अंग्रेज़ों का सबसे बड़ा दुश्मन था। पंडित सुन्दर लाल लिखते हैंः ''निःसंकोच दुनिया की आज़ादी के शहीदों में 1857 ई0 के मोलवी अहमदुल्लाह, शाह का नाम सदेव के लिए सम्मान योग्य रहेगा।

(सन् सत्तावन पेज 208) मालेसन प्रसिद्ध इतिहासकार लिखता हैः–

''मोलवी अहमदुल्लाह एक आश्चर्यजनक इंसान था, ग़दर (विद्रोह) के दिनों में सैन्य नेतृत्व की हैसियत से उसकी योग्यता के बहुत से प्रमाण मिले, कोई भी अन्य व्यक्ति गर्व के साथ नहीं कह सकता था कि मैंने दो बार ''सरकालिन कैम्पबेल'' को युद्ध के मैदान में प्राजित किया।

यही इतिहासकार आगे लिखता हैः–

''अहमदुल्लाह शाह सच्चा देश प्रेमी था उसने किसी निहत्थे का खून बहा कर अपनी तलवार को अपवित्र नहीं किया, वीरता के साथ डट कर खुले मैदान में उन विदेशियों के साथ युद्ध किया जिन्होंने उसके वतन को छीन लिया था, हर देश के वीरों और सच्चे लोगों को चाहिए कि मोलवी अहमदुल्लाह शाह को सम्मान के साथ याद रखें''।

(History of Indian Mutiny Vol. 4 Page 381)

स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधूरा रहेगा जब तक मैसूर के उच्च साहसी और उच्च दृष्टि शासक फतेह अली खाँ टीपू सुलतान का उल्लेख न किया जाए, यही देश का प्रथम व्यक्ति था जिसने अंग्रेज़ों के षड़यंत्र और चालाकी को भाँप लिया था कि वह गहरी कूटनीति से एक एक राज्य को अपना अधीन बनाते रहेंगे यहाँ तक पूरा देश उनके हाथ में चला जाएगा, टीपू सुलतान ने पूरी तैयारी और मज़बूती के साथ अंग्रेज़ों से लड़ने का फ़ैसला किया देश के दूसरे राजाओं और महाराजाओं को आमादा किया कि वह अंग्रेज़ों को देश से निकाल दें, स्वयं उसने अंतिम साँस तक अंग्रेज़ों से मुक़ाबला किया, परन्तु वह देश के गद्दारों और विश्वासघातियों के कारण अपने प्रयास में असफल रहा और भारत का ये स्वाभिमानी सपूत सरंगा पट्टम के युद्ध स्थल पर 4 मई 1799 ई0 को शहीद हो गया। टीपू सुलतान की शहादत के बाद अंग्रेजों ने प्रसन्नता का बहुत बड़ा उत्सव मनाया, सड़कों पर बड़े–बड़े जुलूस निकाले, अपने सैनिकों को एवार्ड और पुरस्कार दिए, टीपू सुल्तान की शहादत और उसके मैसूर राज्य का पतन भारत में अंग्रेज़ों की सबसे बड़ी सफलता थी जिसके फलस्वरूप उसने भारत पर अपना दावा करने का साहस किया। जनरल ''हैरिस'' को टीपू सुल्तान की शहादत की ख़बर पहुंची तो लाश के पास आकर प्रसन्नता से प्रफुल्ल होकर कहा ''आज से हिन्दुस्तान हमारा है''

अंग्रेज़ भलीभांति जानते थे कि टीपू सुलतान के जीते जी भारत में हमारे पैर नही ंजम सकते हैं। टीपू सुल्तान की शहादत के लगभग डेढ़ सौ वर्षों के बाद 1947 ई0 में भारत अंग्रेज़ों की गुलामी से आज़ाद

हुआ, स्वतंत्रता संग्राम ने लंबे समय तक सफ़र किया बड़ी कठिनाइयों और मौत की घाटियों और ख़ून की नदियों से गुज़र कर भारत वासी आज़ादी की मंज़िल तक पहुँचे इसकी वास्तविक जानकारी हमारे वर्तमान नवयुकों को बिल्कुल नहीं है। स्वतंत्रता संग्राम में जिन महापुरुषों का योगदान है जिनके प्रयासों से देश को आज़ादी मिली उनकी बहुत लंबी सूची है। संभव नहीं कि उन सब का उल्लेख किया जाए, कुछ का उल्लेख निम्नलिखित हैः—

महात्मा गाँधी, इनका पूरा नाम मोहन दास करम चन्द गाँधी था, कठियावाड़, पोरबन्दर, गुजरात में 1869 ई0 में जन्मे, पढ़ लिख कर एक अच्छे बैरेस्टर बने, कुछ दिनों बाद अपने स्वदेशवासी गुजराती भाइयों की क़ानूनी सहायता के लिए दक्षिण अफ्रीक़ा गये, वहाँ अंग्रेजों के वांशिक भेदभाव से प्रभावित होकर भारत वापस आ गये, यहाँ ब्रिटिश साम्राज्य का अत्याचार चल रहा था जिससे वह बहुत दुखी थे, पूरा समय उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में लगा दिया, अपनी बुद्धि और ज्ञान से अंग्रेज़ों के विरुद्ध ऐसे ऐसे आन्दोलन आरंभ किए कि अंग्रेज़ों की चूल हिल गई और उनको बोरिया बिस्तर बाँधना पड़ा, देश के बड़े—बड़े नेता और लीडर उनके साथ थे। उन्होंने बेरेस्ट्री का ड्रेस उतार कर भारत की भूखी नंगी ग़रीब जनता का ड्रेस लपेट लिया, धोती हमारे देश का पुराना पहनावा है परन्तु उसके पहनावे में ऊँची जात नीची जात वालों में अन्तर होता था, नीची जात वाले घुटनों से ऊपर धोती बाँधते थे ऊँची जात वाले नीचे तक धोती पहनते थे, गांधी जी ने दलितों का साथ दिया सदैव घुटनों से ऊपर धोती बांधी, दलित वर्ग, समाज का बहुत दबा कुचला हुआ वर्ग था उनको ऊपर उठाने की आवश्यकता थी, कभी कभी गाँधी जी दलितों की कालोनी में जाकर ठहरा भी करते थे, वह सत्यवादी इन्सान थे, देश के विभिन्न धर्म वालों को साथ में लेकर चलने वाले, एकता और प्रेम के प्रचारक थे, अहिंसा और शान्ति उनका नारा था, जिसके बल पर उन्होंने देश को आज़ाद कराया, यह बहुत बड़ी ट्रेजडी है कि वह जीवन भर अहिंसा पर चले और दूसरों को अहिंसा का पाठ पढ़ाया, परन्तु वह स्वयं हिंसा का शिकार हो गये, अभी देश को स्वतंत्र हुए एक वर्ष भी नहीं बीता था कि 30 जनवरी 1948 ई0 को नाथूराम गोडसे ने राष्ट्रपिता मोहन दास करम चन्द गाँधी की हत्या करदी, पूरा देश शोक में डूब गया उस समय वह प्रार्थना मीटिंग से वापस हो रहे थे, धोती के अलावा उनके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं था, उनके सीने पर तीन गोलियाँ मारी गईं, अन्तिम समय उनके मुँह से ''हे राम'' के शब्द निकले।

पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म स्थान इलाहाबाद है उनकी तारीख़ पैदाइश 1889 ई है कशमीरी पंडित हैं, स्वतंत्रता संग्राम में उनका और उनके पिता मोती लाल नेहरू का भी बड़ा योगदान है, इलाहाबाद में उनका घर ''आनन्द भवन'' इतिहास में सदैव याद रखा जाएगा जो स्वतंत्रता संग्राम का केन्द्र था, देश के सारे नेता वहां जाते थे, काँग्रेस पार्टी के छोटे बड़े प्रोग्राम और कानफ्रेंस देश के स्वतंत्र होने से पहले वहीं होते थे, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्रता संग्राम में बड़ा संघर्ष किया, आए दिन गिरफ्तार होते और जेल जाते थे, देश आज़ाद होने के बाद सर्व प्रथम देश के प्रधान मंत्री बने, मरते दम तक इस पद पर रहे, एक अच्छे राजनेता होने के साथ बड़े स्पीकर और लेखक थे, *Discovery of India* उनकी बहुत प्रसिद्ध किताब है, भारत की प्रथम महिला प्रधान मंत्री इंदिया गाँधी उन्हीं की बेटी थीं।

मई 1964 ई0 में पंड़ित जवाहर लाल नेहरू का देहान्त हो गया, पूरी दुनिया में उनका सोग मनाया गया। उनकी मृत्यु के बाद प्रधान मंत्री के पद पर लाल बहादुर शास्त्री नियुक्त हुए जिनका देहान्त 18 महीने के बाद 11 जनवरी, 1966 ई0 को ताशकन्द में हो गया जो अब उज़बेकिस्तान में है।

शेखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन देवबन्दीः आप स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े मुस्लिम रहनुमा, दारुल उलूम देवबन्द के प्रधानाचार्य, जामिआ मिल्लिया देहली के संस्थापक, रेशमी रूमाल आन्दोलन के प्रमुख प्रेरक थे, हिजाज़ से वापसी पर शरीफ़ मक्का ने अंग्रेज़ों के इशारे पर आपको गिरफ़्तार किया और उनके हवाले किया उसके बाद आपको रूम महासागर के ''मालटा टापू'' में कैदी बना कर रखा गया, 1920 ई0 में आप मुक्त होकर भारत वापस आये, उसी वर्ष हज़रत शेख़ुल हिन्द रह0 का इन्तिक़ाकल हो गया, अल्लाह तआला मरहूम के दरजात बुलन्द फ़रमाए।

जंगे आज़ादी के निडर और बेबाक रहनुमा मौलाना मुहम्मद अली जौहर::—

आप का जन्म 1878 ई0 में रामपुर में हुआ, अलीगढ़ में शिक्षा प्राप्त करने के बाद उच्चतर शिक्षा आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी लन्दन से प्राप्त की, अंग्रेजी और उर्दू के सर्वोत्तम वक्ता थे, 1911 ई0 में अंग्रेज़ी में ''कामरेड'' समाचार पत्र निकाला, और उर्दू में ''हमदर्द'' समाचार पत्र निकाला, खिलाफ़त आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन में खुल कर भाग लिया, भारतीय नेताओं की माँगों पर विचार करने के लिए अंग्रेज़ी सरकार ने लन्दन में 1930 ई0 में गोल मेज कान्फ्रेंस बुलाई। मौलाना मुहम्मद अली बीमार होने के बावजूद उसमें भाग लेने के लिए तैयार हो गये। वहां जाकर मौलाना ने भाषण दिया, मौलाना के जीवन का ये अन्तिम भाषण था, मौलाना ने कहाः— मैं इस समय उसी हालत में वापस जाऊँगा जबकि आज़ादी का परवाना मेरे हाथ में हो। मैं एक ग़ैर मुल्क में मरने को प्राथमिकता दूंगा, जबतक कि वह स्वतंत्र देश है। अगर आप मुझे आज़ादी नहीं देंगे तो फिर आपको यहाँ मुझे क़ब्र के लिए जगह देनी होगी''।

उनकी यह बात सत्य सिद्ध हुई। 4 जनवरी 1931 ई0 को लन्दन ही में उनका देहान्त हो गया। और मुफ़्ती—ए—आजम फ़लस्तीन सय्यद अमीनुल हुसैनी के आग्रह पर उनके शव को फ़लस्तीन में दफ़नाया गया, देश—विदेश के बड़े—बड़े राजनेताओं ने उनको श्रृद्धांजली अर्पित की।

महेन्द्र प्रताप सिंहः भारत के क्रान्तिकारी नेता जिनका जन्म 1886 ई0 में हुआ, देश की आज़ादी के लिए गुप्त आन्दोलन में भाग लिया, उसके लिए विदेशों की यात्रा की, 1915 ई0 में जब अफ़गानिस्तान के शहर काबुल में भारत की निर्वासित सरकार बनी तो आप अध्यक्ष बने, देश की आज़ादी के बाद पार्लियामेंट के सदस्य नियुक्त हुए।

भगत सिंहः पंजाब के रहने वाले 25 वर्षीय क्रान्तिकारी नवयुवक जिन पर एक अंग्रेज़ अधिकारी ''सानड्रस'' की हत्या का आरोप था, 1931 ई0 में लाहौर जेल में उनको फांसी दी गई। मौलाना हसरत मोहानी का दिया हुआ ''इनक़िलाब ज़िन्दाबाद'' का नारा उन्हीं की वजह से बहुत प्रसिद्ध हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम की दास्तान को राम प्रसाद बिस्मिल के शेर पर समाप्त किया जा रहा है।

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है ज़ोर कितना बाज़ू—ए—क़ातिल में है।।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

नाप-तौल में कमीः-

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता हैः—

खयानत का एक नतीजा नाप—तौल में कमी भी है, ये ऐसा खतरनाक मर्ज है कि हजरत शुऐब अलैहिस्सलाम को इसीलिए भेजा गया कि वो इसका सुधार करें, और जब कौम ने बात न मानी तो वो नष्ट कर दिए गए। ये बीमारी महामारी की तरह पैदा हो गई है, अच्छे अच्छे लोग इसमें लिप्त हैं, अल्लाह ने इरशाद फरमायाः—

अनुवादः— ''नाप—तौल में कमी करने वालों के लिए तबाही है, जो लोगों से जब नाप कर लेते हैं तो पूरा पूरा लेते हैं, और जब नाप कर या तौल कर उनको देते हैं तो घटा कर देते हैं, क्या ऐसों को ये खयाल नहीं कि वो उठाए जाने वाले हैं, एक बड़े दिन के लिए, जब लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे, हरगिज हरगिज ये नहीं चाहिए था, यकीनन गुनाहगारों का आमालनामा सिज्जीन में होगा।

(अल—मुतफ्फिफीन :1—7)

इस आयत में एक तरफ ऐसे लोगों की तबाही का जिक्र है तो दूसरी तरफ उनको फासिक व फाजिर (बड़े गुनाहगार) बताया गया है, और साफ साफ कह दिया गया कि ऐसे लोगों के लिए जहन्नम का फैसला है।

ईमान वालों को बार बार ताकीद है कि वो नाप—तौल में इन्साफ से काम लें, सूरह बनी इस्राईल में फरमायाः—

अनुवादः— ''और जब नापना तो पूरा पूरा नापना और सही सही तराजू से तौलना, यही बेहतर है और नतीजा इसी का अच्छा है''।

(अल—इसराः 35)

आयत के आखिरी हिस्से से जाहिर होता है कि नाप—तौल की कमी से चाहे शुरू में कुछ फायदा होता हो लेकिन दुनिया में भी इसका अंजाम अच्छा नहीं और आखिरत की सजा अपनी जगह है।

हासिल ये कि इस्लाम में साफ सुथरी ज़िन्दगी अपनाने का हुक्म दिया गया है, जिसमें कोई चोरी न हो, धोखा न हो, किसी के माल में ना जायज हस्तक्षेप न हो, ये चीज उस वक्त पैदा होती है जब आखिरत में जवाब देने का एहसास जागा रहता है और यही हकीकत में तकवे की बुनियाद है। ◆◇◆

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में
मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

1. दान और कृपा, 2. बुरे काम करने वालों को क्षमा करना और क्रोध को अपनी विनम्रता से मिटाना, 3. संसार की बुरी इच्छाओं से अपने को बचाए रखना, 4. इस बिगाड़ की दुनिया से छुटकारा प्राप्त करके उस शाश्वत संसार का आनन्द प्राप्त करने की चिन्ता करते रहना 5. अपने कर्मों के फलों को बुद्धि पर परखना, उनसे शिक्षा प्राप्त करना और उन पर चिन्तन करते रहना। 6. उच्च कार्यों को सम्पन्न करने के लिए बुद्धि का उपयोग करते रहना, 7. प्रत्येक व्यक्ति से बात–चीत में नरमी, विनम्रता और खुशगवार माहौल में मिलना, 8. लोगों से अच्छे ढंग से व्यवहार करना ताकि अपनी इच्छाओं को उनकी इच्छाओं पर वरीयता दी जाए। 9. लोगों से अलग हटकर खुदा की ओर पूरी तरह ध्यान लगाया जाए, 10. आत्मा को खुदा के लिए इस तरह समर्पित कर देना कि यह केवल उसी के प्रेम और मिलन के लिए जीवित रहे और जब तक यह शरीर में है उसी की दासता है और उसी से मिलने के लिए जीवित रहे। यहाँ तक कि शरीर से आत्मा निकल जाए। वह सबसे अच्छे लोग हैं जो कम खुराक पर सन्तोष करते हैं और इस नाशवान दुनिया से बचते हैं। खाने–पीने, ओढ़ने, वैवाहिक आनन्द से दूर रहते हैं। सबसे नीच वह कौम है जो लैगिंक आनन्द और खाने पीने को अपने अधिकार के अनुसार वैध घोषित कर देती है, यह सभी बातें कठिन हैं इसलिए सम्पूर्ण पैगम्बर और सबसे बड़े रसूल अर्थात बुद्धि ने कहा है कि जो लोग पैगम्बरों के बनाए हुए कानून को मानते हैं वह शैतान के स्वार्थ के पालनकर्ता हैं क्योंकि पैगम्बर स्वयं लैंगिक आनन्द, क्रोध, खाने–पीने के स्वाद, अच्छे कपड़ों और महिलाओं के सौन्दर्य में लिप्त रहे, वह मानवता पर उनको काफिर कहकर अत्याचार करते रहे, बल्कि उस अत्याचार को पसन्द करते रहे। जो उलमा पैगम्बरों का आज्ञापालन करते हैं, वह संसार को प्राप्त करने की चिन्ता में लगे रहते हैं। हालाँकि वह उनके झूठ से अवगत होकर उनके इन्कारी होते हैं। लेकिन फुर्सत के समय में उपयुक्त समय पाकर और समय के अनुसार तरह– तरह के क़ानून बनाते रहते हैं।

इस विद्वान हकीम का उत्तर उस सभा में किसी से न बन सका, वह हकीम जो दुनिया की चिन्ताओं से अलग हो चुका था, बाहर चला गया जिसके बाद खलीफतुल्लाह (अल्लाह के खलीफा) ने अपने विचार प्रकट किए, अकबर को यहाँ खलीफतुल्लाह कहा गया है। वह अपने मुरीदों को सम्बोधित करके कहता हैः–

''अल्लाह तआला की इबादत करना अनिवार्य है और जो उसके निकट है उसकी प्रशंसा भी आवश्यक है। किसी इंसान का रुतबा सितारों के बराबर नहीं क्योंकि इंसान को सितारों की बुलन्दी प्राप्त नहीं। सालिक को अल्लाह बुजुर्ग के अतिरिक्त किसी और से मतलब नहीं। वह खाता है इसलिए कि वह खुदा की बन्दगी कर सके। वह नौकरी इसलिए करता है कि वह अपने जीवन में विवश और मोहताज बनकर न रहे। वह औरत की इच्छा इसलिए करता है कि उससे नेक और खुदा तरस सन्तान पैदा हो। वह प्रकाश और सितारों का सम्मान इसलिए करता है कि उसको अल्लाह तआला से निकटता प्राप्त हो। वह सोता इसलिए है कि उसकी आत्मा आसमानों की दुनिया की सैर कर रही है। इस तरह सालिक हर समय सच्चाई की बन्दगी और आज्ञापालन में व्यस्त रहता है। किसी क्षण भी नमाज से बेपरवाह नहीं रहता। जानदारों को कष्ट देने से परहेज करता है। अल्लाह तआला की पैदा की गयी चीजों का सम्मान करता है। बिना किसी आवश्कयकता के पेड़, घास और हरियाली को नहीं काटता है। धरती के हर भाग को अपवित्र नहीं करता है। उसी भाग को अपवित्र करता है जो अपवित्रता के लिए विशेष हो गया है। वह आग और पानी को किसी अपवित्र स्थान पर फेंकता है। सितारों पर दुरुद भेजता है। वह कम बोलने, कम खाने और कम सोने की आदत डालता है। इनके अतिरिक्त उसकी और भी बहुत सी व्यस्तताएँ हैं। एक तो यह है कि अपने वाह्य इन्द्रियों को अपनी उँगलियों से बन्द कर देता और सूरज का ध्यान लगाता है, ''आदि–आदि''।

❖❖❖

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज की दशा

मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0

किसी भी देश और क़ौम के इतिहास में समाज की भूमिका प्रमुख होती है साहित्य और दर्शन, नृत्य या संगीत, भाषा और संस्कृति सभी कुछ दूसरे स्तर की चीज़ें हैं। यदि किसी क्षेत्र में सभ्य और स्वस्थ समाज का अभाव होगा तो कोई भी हुकूमत, कोई भी शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोई भी धर्म या दर्शन वहां के निवासियों को सुख और शान्ति से ज़िन्दगी गुज़ारने में मदद नहीं दे सकेगा। वह समाज जो भले और बुरे की पहचान रखता हो, न्याय और अन्याय के अन्तर की उस में समझ हो, अपना हित और अहित करने वालों की परख हो, किसी भी देश के लिए बड़ी सम्पत्ति है। ऐसे समाज में रहने वाला इंसान यदि बुराई, अन्याय और अत्याचार को रोकने में सक्षम नहीं होता फिर भी यह क्या कम उपलब्धि है कि वह उन का साथ नहीं देता, समर्थन नहीं करता और मन ही मन रोता रहता है सभ्य समाज की कमी को कोई भी वस्तु पूरा नहीं कर सकती है। क्योंकि समाज ही हुकूमत देता है, समाज ही प्रशासन देता है। जब समाज दूषित हो जाता है तब अकुशल और भ्रष्ट लोग हर क्षेत्र में प्रभावी हो जाते हैं और नतीजे में वह देश अपनी साख खो बैठता है और जनता विभिन्न कष्ट झेलने पर मजबूर हो जाती है। दूषित समाज में जब लोग भले बुरे की पहचान खो बैठते हैं, न्याय अन्याय का अन्तर मिट जाता है जंगल का क़ानून चलने लगता है जो भी ऊँची कुर्सी पर बैठ गया उसके सामने सर झुका दिया, उसके गुण गाने लगे और चढ़ते सूरज के पुजारी बन गए तब स्थिति बहुत गम्भीर होती है और यह चिन्ता का विषय होता है। सभ्य समाज में यदि कभी अकुशल और भ्रष्ट लोग शासन–प्रशासन पर क़ब्ज़ा जमाने में सफल होते हैं तो उन का क़ब्ज़ा अधिक समय तक जारी नहीं रहता और शीघ्र ही उसमें परिवर्तन आ जाता है। भारत की आज़ादी के बाद सभ्य और स्वस्थ समाज का निर्माण देश की पहली ज़रूरत थी जिस पर ध्यान नहीं दिया गया। नैतिक शिक्षा का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर दिया गया। यदि राष्ट्र रूपी नैतिक मूल्यों का उपहार देने का प्रयत्न करते तो उस समाज में कोई ज़ुल्म व अन्याय से हाथ न मिलाता, उसमें हक़ बात कहने का साहस होता और अत्याचार का हाथ पकड़ने की हिम्मत होती। इसके लिए ईश्वर का विश्वास और ख़ुदा का ख़ौफ़ ज़रूरी होता है इस्लाम की शिक्षा जिस से यह देश भली भांति परिचित था, इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकती थी। देश का हित चाहने वाले प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह देश की मूल समस्याओं का जायज़ा ले, वह समस्यायें जिन्होंने हमारे समाज को दीमक की तरह चाट कर अन्दर से खोखला कर दिया है और अनेक क्षेत्रों में भौतिक तरक्की के होते हुए भी आम लोगों तक उनका लाभ नहीं पहुंच सका है। सबसे पहली ख़राबी जो हमारे देश में बहुत तेज़ी से फैली है वह है इंसानी जान के महत्व और उसके मूल्य को न पहचानना। किसी भी समाज के लिए यह सबसे भयानक खतरा कहा जा सकता है। इंसान की जान का महत्व हीन हो जाना किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति के लिए ही नहीं बल्कि इंसानियत के लिए

मौत का पैग़ाम होता है। जब किसी देश में भाई भाई के खून का प्यासा हो जाता है तब उस देश की विशाल जनसंख्या, उपज और खनिज के बड़े बड़े भण्डार, उच्च कोटि की शिक्षा और तकनीक कोई चीज़ लाभप्रद सिद्ध नहीं होती यह बहुत आश्चर्य की बात है कि वह देश जिसने प्राचीन काल में प्रेम की वंशी बजाई थी, संस्कृत फ़ारसी और फिर हिन्दी उर्दू में मुहब्बत के गीत गाए थे, सूफ़ी और सन्तों ने इंसानियत के आदर और सम्मान का पाठ पढ़ाया था और अन्त में गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का सन्देश पूरी दुनिया को सुनाया था आज उसी देश में इंसानी जान की कोई क़ीमत नहीं है। दूसरी ख़राबी संकीर्णता और साम्प्रदायिकता की है जो भाषा संस्कृति और सभ्यता के मार्ग से होते हुए अब क्षेत्रीयता तक पहुंच चुकी है। इसी बीमारी ने हमारे देश को प्राचीन काल में टुकड़े टुकडे कर दिया था और विदेशी शक्तियों को आमंत्रित करने में विशेष भूमिका निभाई थी। यह बीमारी आज फिर जोर पकड़ रही है। यदि इसे क़ाबू में न किया गया तो एक बार फिर नफ़रत का उन्माद बोतल के जिन्न की तरह बाहर आ सकता है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में और फिर प्रदेशों के विभिन्न अंचलों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और विद्रोह की भावना पाई जाती है। यहां विभिन्न जातियों और उपजातियों के बीच भी भेद भाव और घृणा की दीवारें खड़ी हैं। एक जाति दूसरी जाति के प्रति अन्याय और अत्याचार किये जाने में संकोच नहीं करती बल्कि इसको अपनी जाति की सेवा समझते हुए शुभ कार्य मानती हैं किसी विभाग में कोई विशेष जाति का अधिकारी पहुंच जाने पर उस का प्रयास होता है कि अपनी ही बिरादरी के लोगों को सेवा के अवसर दिये जायं और उन्हें विशेष लाभ पहुंचाये जायें, चाहे उनमें कुशलता हो या न हो। हमारे समाज का यह रोग उसे दीमक की तरह चाट रहा है और सम्पूर्ण प्रशासन इस बीमारी के कारण खोखला और कमज़ोर हो गया है। तीसरी बड़ी ख़राबी जो हमारे देश में बड़ी तेज़ी से फैली है और राष्ट्र निर्माण के कार्य में पहाड़ जैसी बाधा बन कर खड़ी हो गई है, अति शीघ्र धनवान बनने की इच्छा है। धन दौलत पैदा करने का भूत देश के बच्चे–बच्चे पर सवार हो गया है। धन दौलत कमाना और उसके लिए प्रयास करना बुरा नहीं है मगर परिश्रम करके एक एक सीढ़ी चढ़ते हुए यदि धन कमाया जाय तो वह अपने ही नहीं बल्कि राष्ट्र के हित में कल्याणकारी होगा। मगर एक ही रात में धनवान बन जाने की इच्छा हर योजना को असफल कर देती है, हर निर्माण कार्य को कमज़ोर कर देती है। यह वह बीमारी है जो कैंसर की तरह हर व्यक्ति को चिपट गई है इस के कारण प्रत्येक व्यक्ति बड़े सा बड़ा खतरा ले कर अपने घर परिवार के सुख के लिए आम जनता को नुकसान पहुंचाने वाले कार्य करता है।, अपने अधिकारों का दुरुपयोग करता है छोटे से छोटा काम ईमानदारी से करना असम्भव होता जा रहा है। हर काम की कीमत चुकानी होती है, इसे रिश्वत का नाम दिया जाय या ''सुविधा शुल्क'' कहा जाए। शब्दों के हेर फेर से कोई अन्तर नहीं पड़ता। हर व्यक्ति दूसरे की मजबूरी से लाभ उठा रहा है। इंसानी हमदर्दी, मानव प्रेम और देश भक्ति केवल कोरे शब्द हैं इन भावनाओं का अनुभव अब कहीं नहीं होता। धन बटोरने का यह पागलपन देख कर ऐसा लगता है कि इस देश में सभी नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका है। आपसी घृणा और धन कमाने की प्रतियोगिता ही शेष बची है। घृणा का निशाना कभी कोई ज़ात–बिरादरी बनती है, कभी कोई भाषा बनती है और कभी कोई राजनैतिक

पार्टी बनती है। हर हाल में इंसानियत का खून होता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि इस्लाम की शिक्षा समाज की हर बुराई को दूर करने की ताक़त रखती है। अब हम उपरोक्त तीनों ख़राबियों के विषय में कुरआन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। सबसे पहली खराबी इंसानी जान का मूल्यहीन हो जाना है जिसके नतीजे में नफरत जन्म लेती है और हत्या आम होती है अल्लाह कुरआन में इस विषय पर ऐलान फरमाता है ''जो व्यक्ति किसी की अनर्थ में हत्या करेगा बिना इस कारण कि हत्या का बदला लिया जाए या देश में आतंक फैलाने के मकसद से किसी को सज़ा दी जाय तो उसने मानो तमाम लोगों की हत्या की, और जो उसके जीवन का कारण बना तो जैसे तमाम लोगों के जीवन का कारण बना।''

निष्कर्ष यह कि एक इन्सानी जान इतनी क़ीमती है कि उसकी तुलना तमाम इंसानों की ज़िन्दगी से की गई है हज़रत मुहम्मद साहब का भी यही उपदेश है इंसान इतना बहुमूल्य है कि खुदा की मख़लूक़ को खुदा का परिवार कहा गया है। दूसरी ख़राबी साम्प्रद्रायिक नफ़रत की है जो धार्मिक, जात–पात और क्षेत्रीय आधार पर इंसानों के बीच भेद भाव और तनाव पैदा कर रही है। जब कि मानवता के एकत्व का सिद्धान्त इस्लाम का प्रमुख सिद्धान्त है। कुरआन में जगह जगह स्पष्ट किया गया है कि इंसानों का पैदा करने वाला एक ही है और इंसानियत का पिता भी एक है, सब इंसान एक ही मां बाप की सन्तान हैं, ज़मीन भी एक है और जिन्दगी की ज़रूरतें भी सब की समान हैं अतः किसी भी इन्सान को किसी दूसरे इन्सान पर रंग, नस्ल, भाषा या क्षेत्र के आधार पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं है।

कुरआन में कहा गया है ''लोगो हम ने तुम को एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया है और तुम में क़ौम–क़बीले बनाए हैं, ताकि एक दूसरे की पहचान में आसानी हो'' (49:13)

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने समानता की इस भावना को प्रबल करने के उद्देश्य से फ़रमाया था ''लोगो तुम्हारा पालनहार भी एक है और तुम्हारा बाप भी एक है, याद रखो किसी अरब वासी को गैर अरब वासी पर और किसी ग़ैर अरब वासी को अरब वासी पर और किसी काले को गोरे पर और किसी गोरे को किसी काले पर कोई फ़ज़ीलत प्राप्त नहीं है, यदि कोई श्रेष्ठता है तो केवल खुदा के ख़ौफ़, भक्ति और पवित्र आचरण के आधार पर ही हो सकता है।''

तीसरी ख़राबी जो शीघ्र अति शीघ्र धनवान बन जाने की भावना का पैदा होना है, जो देश के निर्माण में बाधक और योजनाओं के विफल होने का कारण है इसके विषय में इस्लाम ने जो इलाज बताया है वह ईश्वर का भय और परलोक की जवाब देही का विश्वास मन में बिठाना है। जब यह यक़ीन होगा कि कोई शक्ति है जो हमें देख रही है और हमें उसके पास जा कर अपने कर्मों की जवाबदेही करना है तो इंसान हर तरह की धोखा धड़ी, रिश्वत और अधिकारों के दुरुपयोग से स्वयं को रोकने का प्रयत्न करेगा। देश प्रेम की भावना भी इस सम्बंध में प्रभावकारी सिद्ध हो सकती है मगर सच्चा देश प्रेम भी ईश्वर की सत्ता और परलोक की जवाबदेही पर विश्वास के मार्ग से ही मन में आता है। इस्लाम ने इंसान के नैतिक गुणों को धन दौलत पर महत्व दिया है। इस्लाम ने इंसान को दौलत का परस्तार बनने से रोका है और धन दौलत का उचित महत्व समझाया है। उसने इसे खुदा की नेमत बताने के साथ साथ इंसान के लिए फ़ितना और आज़माइश बता कर इससे सावधान रहने का संकेत दिया है। कुरआन कहता

है ''और निगाह उठा कर भी न देखो दुन्या की शानदार ज़िन्दगी की ओर जो हमने उनमें के विभिन्न लोगों को दे रखी है, वह तो हमने परीक्षा में डालने के लिए दी है, और तेरे खुदा की दी हुई आजीविका वही अच्छी है जो हलाल हो और देर पा (अधिक लाभकारी) हो। (20:131)

''लोगो! तुम को माल की ज़्यादती की लालसा ने गफलत में डाल दिया यहां तक कि तुम ने क़बरें जा देखीं, सावधान तुम्हें शीघ्र मालूम हो जायगा, पुनः सावधान! तुम्हें शीघ्र मालूम हो जायगा, सावधान यदि तुम जानते और विश्वास करते (तो गफलत में न पड़ते) तुम अवश्य ही दोज़ख़ को देखोगे, फिर उसको ऐसा देखोगे कि आंखों देखा विश्वास हो जायगा, फिर उस दिन तुम से नेमत (जो कुछ दुनिया में उपयोग किया) के विषय में पूछताछ होगी''।

(सूरः तकासुर)

यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि मुसलमानों की ज़िन्दगियों को देख कर किसी प्रकार की शंका इस्लाम के विषय में नहीं करना चाहिए। देश के बुद्धिजीवियों का कर्तव्य है कि वह इस्लाम और मुसलमान के अन्तर को समझें। मुसलमानों की ख़राबियों को इस्लाम की ख़राबी न समझा जाये।

इस्लाम के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को स्वीकार करके स्वतंत्रता के बाद देश में तेज़ी से फैली हुई बुराईयों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इस समय दुनिया की स्थिति अन्धेरे में हाथ पैर चलाने के समान है और उसके सामने एक बड़ा शून्य है वह किधर जाये कौन सा मार्ग अपनाये उसे नहीं मालूम। सारे इल्म, सारे फलसफ़े, सारी व्यवस्थायें फेल हो चुकी हैं। इस समय दुनिया को सही और सच्चे मार्गदर्शन की ज़रूरत है। प्रत्येक क़ौम अपनी संस्कृति, सभ्यता और अपने साहित्य तथा दर्शन पर गर्व करती है। अब दुनिया का धुर्वीकरण हो रहा है एक केन्द्र पर जमा होने की इच्छा दिनों दिन प्रबल होती जा रही है, इस स्थिति में ज़रूरत है एक ऐसे सन्देश की जो इन्सान दोस्ती, प्रेम मुहब्बत और समानता के आधार पर किसी में कोई भेदभाव न करे। सब का रिश्ता एक सृष्टा से जोड़े और उस मालिक की सत्ता को विश्व में स्थापित करे।

आज भारत उस स्थिति में है कि वह इस सन्देश को स्वीकार कर के यदि क़दम आगे बढ़ाये तो दुनिया का नेतृत्व शीघ्र ही उसके हाथ में होगा।

बुराईयों का एक मुख्य कारण इंसान के दिल से खुदा का ख़ौफ निकल जाना है। जब तक उसके दिल में खुदा के द्वारा प्रत्येक क्षण देखे जाने और निगरानी किये जाने का विश्वास मजबूत नहीं होगा और परलोक में अपने छोटे बड़े प्रत्येक काम की जवाबदेही का यकीन नहीं होगा तब तक इंसान धोखाधड़ी, रिश्वत, अन्याय, झूठी गवाही, हत्या, अत्याचार, बलात्कार, आदि बुराइयों से स्वयं को नहीं रोक सकता। खुदा का डर यदि इंसान पर हर दम सवार रहे तो वह कोई अनैतिक कार्य नहीं कर सकता।

अतः निष्कर्ष यह कि भारत के पुनरुत्थान के लिए मुख्य रूप से हर प्रकार के भेद भाव और जातिवाद की गुटबन्दी को त्याग कर एक आदर्श समाज की स्थापना करना होगी।

दूसरे यह कि एक अकेले महान, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, सर्वश्रृष्टा, अर्रहमान की शुद्ध शक्ति और उसका भय सीखना होगा। जब हम भारत वासी उपरोक्त दो हकीकतों को स्वीकार करके कदम से क़दम मिला कर आगे बढ़ेंगे तो हर प्रकार की बुराइयों का स्वतः उन्मूलन आरम्भ होगा। उस समय महान भारत विकास के पथ पर आगे बढ़ते हुए निश्चित ही विश्व का नेतृत्व करेगा।

❖❖❖

जंगे आज़ादी के चन्द गुमनाम सिपाही

डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इतिहास का विषय है कि अन्य धर्मों की तरह मुसलमानों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में जमकर भाग लिया बल्कि प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व मुसलमानों ने ही किया था जिसमें मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में देश के हिंदू मुसलमान समेत सभी धर्म–जाति के लोगों ने अंग्रेजों से दो दो हाथ किये। ये अलग बात है कि वह क्रांति असफल हो गई लेकिन जो आजादी की आग इन रणबाकुरों ने भारतीयों के सीनों में दहकाई थी वह आग आखिरकार 90 साल के बाद रंग लाई और देश 1947 में आजाद हुआ।

वर्तमान में, भारतीय मुसलमानों को भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है और उनकी देशभक्ति पर सवाल उठाए जा रहे हैं। सांप्रदायिक संगठन मुसलमानों को इतिहास से हटाकर उसे फिर से लिखने का प्रयास कर रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय मुसलमानों के बारे में भ्रामक जानकारी सुनियोजित तरीके से फैलाई जा रही है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों के इतिहास को छुपाने का प्रयास किया जा रहा है। इतिहास पर एक संक्षिप्त नजर डालने से पता चलता है कि भारतीय मुसलमानों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया बल्कि अपने प्राणों की आहुति भी दी। प्रसिद्ध लेखक खुशवंत सिंह के हवाले से कहा गया है कि ''भारतीय स्वतंत्रता मुसलमानों के रक्त पर लिखी गई है, स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी जनसंख्या के उनके छोटे प्रतिशत के अनुपात में कहीं अधिक थी''। बहरहाल मेरा यह लेख उन चंद मुस्लिम स्वतंत्रता सेनानियों पर प्रकाश डालने के लिए है जो इतिहास में गुम हो गए हैं और जिन्हें अक्सर याद नहीं किया जाता है।

मुस्लिम वेल्लोरीः–

मोहम्मद अब्दुल वाहिद खान, जिनका जन्म 1883 में श्रीरंगपट्टना के पास स्थित ऐतिहासिक शहर गंजाम में हुआ था, बड़े होने पर ''मुस्लिम वेल्लोरी'' के नाम से जाने जाने लगे। वे खिलाफत आंदोलन (1919–1922) में अपनी भागीदारी के लिए जाने जाते हैं, जिसके दौरान उन्हें महात्मा गांधी, अली बंधुओं (मोहम्मद अली और शौकत अली), डॉ0 मुख्तार अहमद अंसारी, हकीम अजमल खान और सैफुद्दीन किचलू सहित कई उल्लेखनीय स्वतंत्रता सेनानियों से मिलने का अवसर मिला। अपने तीखे बयानों के कारण वेल्लोरी को अक्सर जेल जाना पड़ा और उन्होंने 1924 से 1927 के बीच बेंगलुरु केंद्रीय जेल में समय बिताया।

कप्तान अब्बास अलीः–

अब्बास अली का जन्म 3 जनवरी 1920 को खुर्जा, बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। वे स्वतंत्रता सेनानियों के राजपूत मुस्लिम परिवार से थे। उनके दादा रुस्तम अली खान को 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश सेना ने बुलंदशहर के काला आम में फांसी दे दी थी। किशोरावस्था में ही स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद अब्बास अली भारतीय मुक्ति आंदोलन में शामिल हो गए। स्कूली दिनों से ही अब्बास अली भगत सिंह के क्रांतिकारी सिद्धांतों से प्रभावित थे। उन्होंने 25 मार्च 1931 को खुर्जा में शहीद भगत सिंह की मृत्युदंड के विरोध में आयोजित

प्रदर्शन में भी भाग लिया था। भगत सिंह को फांसी दिए जाने के तुरंत बाद, वे नौजवान भारत सभा में शामिल हो गए, जिसकी स्थापना भगत सिंह ने की थी, और स्कूली शिक्षा के दौरान ही इसके कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लिया। वहीं से प्रेरित होकर वे अखिल भारतीय छात्र संघ (एआईएसएफ) में शामिल हो गए, जो 1936 में स्थापित वामपंथी दलों की छात्र शाखा थी। उन्होंने आजाद हिंद फौज, जिसे भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) के नाम से भी जाना जाता है, में भर्ती हुए। वे 1945 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में चलाए गए भारतीय सेना के ''दिल्ली चलो'' अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। उन्होंने अराकान में भारतीय सेना के साथ युद्ध किया, लेकिन 60,000 अन्य भारतीय सेना के जवानों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया गया और बाद में उनका कोर्ट मार्शल किया गया तथा उन्हें मृत्युदंड दिया गया। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, नेहरू सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया और वे मुख्यधारा की राजनीति में शामिल हो गए। इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल की घोषणा के समय उन्होंने 19 महीने जेल में बिताए। अपने जीवनकाल में वे 50 से अधिक बार जेल गए। हृदय गति रुकने के कारण 11 अक्टूबर 2014 को उनका निधन हो गया।

शरफुद्दीन कादरीः—

इनका जन्म 1901 में बिहार के नवादा जिले के कुमरावा नामक एक दूरस्थ गाँव में हुआ था। उनका परिवार 1930 के दशक के मध्य में कलकत्ता आ बसा। वे एक प्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक थे, जिन्होंने कलकत्ता में यूनानी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और वे "हिकमत–ए–बंगला'' नामक एक चिकित्सा पत्रिका के संस्थापक भी थे। उन्होंने 1930 में नमक सत्याग्रह आंदोलन के दौरान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। उन्हें महात्मा गांधी के साथ एक ही कोठरी में रखा गया था और उन्होंने हर संघर्ष में गांधीजी का बखूबी साथ दिया। उनके पुत्र मंजर सादिक ने कहा, ''मेरे पिता को अंग्रेजों ने कटक में गांधीजी के साथ क़ैद किया था। वे सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान हर जगह उनके साथ जाते थे।'' उन्होंने औपनिवेशिक भारत के विभाजन का समर्थन करने वाले दो–राष्ट्र सिद्धांत का भी विरोध किया। पद्म भूषण प्राप्त करने के आठ वर्ष बाद, 30 दिसंबर 2015 को 114 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया।

अमजद अली शहीदः—

ये गाजीपुर जनपद के कस्बा भीतरी के रहने वाले थे, हजरत सय्यद अहमद शहीद के नेतृत्व में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध जो पहली जंग लड़ी गई उसमें शरीक हुए और 1831 में बालाकोट वीर गति को प्राप्त हुए।

मौलाना अबुल हसन सिद्दीकीः—

ये गाजीपुर के रहने वाले थे और जंगे आजादी के बेखौफ सिपाही थे। महात्मा गांधी के आह्वान पर 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में प्रतिभाग किया और गिरफ़्तारी पेश की, उन्हें 6 माह की क़ैद हुई। वह मंडल कांग्रेस के अध्यक्ष और गाज़ीपुर जमियतुल उलमा के अध्यक्ष रहे। उन्हें मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्र के विचारधारा का विरोध करने के कारण बहुत सताया गया। उनका 25 मार्च 67 को देहांत हुआ।

मुहम्मद याह्या खानः—

ये गाजीपुर जनपद के मुहम्मदाबाद के रहने वाले थे और ब्रिटिश सरकार में नायब तहसीलदार थे, असहयोग आंदोलन में पद से इस्तीफा देकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े, 1927 के बम कांड में गिरफ़्तार हुए और सात साल की सजा हुई, फैजाबाद जेल में कुछ दिन

रखकर अंडमान भेजा गया, मगर दोबार फैजाबाद जेल इस आशंका के चलते वापस लाया गया कि वह अंडमान में भी बगावत फैला देते। बस्ती जनपद के किसी स्थान पर रमजान में एतिकाफ की हालत में तहज्जुद के समय देहांत हो गया। मृत्यु की तिथि मालूम न हो सकी।

मौलाना वहीदुल्लाह अहरारीः—

ये गाजीपुर जनपद के सरौली गांव उर्फ पैहतिया के रहने वाले थे, सविनय अवज्ञा आंदोलन में बड़ी जवाँमर्दी से प्रतिभाग किया। कांग्रेस के बड़े लीडरों के साथ आजादी की लड़ाई में हाथ बंटाया, पंडित नेहरू के साथ जेल में रहे। असहयोग आंदोलन और ख़िलाफत आंदोलन में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। आजादी की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर इंदिरा गांधी ने उन्हें ताम्रपत्र दिया था। 1978 में गाजीपुर में देहांत हुआ।

मौलवी कमर अहमदः—

ये गाजीपुर जनपद के बहरियाबाद के निवासी थे, जंगे आजादी के आंदोलनों में जेल गए, मौलाना शौकत अली के साथ काम किया पेशे से वकील थे और साथ ही शायर और साहित्यकार भी थे, बाद में वकालत छोड़ दी। शेखुल हिन्द की गिरफ़्तारी और माल्टा में नजरबंदी के बाद डॉक्टर मुख़्तार अहमद अंसारी ने एआनत नज़रबंदाने इस्लाम कमेटी क़ायम की तो वह गाजीपुर ब्रांच के अध्यक्ष बनाए गए।

मौलाना सय्यद मुहम्मद शाहिद फाखरीः—

गाजीपुर जनपद के सैदपुर के रहने वाले थे,बड़े बेबाक और निडर वक्ता थे, उनके ओजस्वी भाषण से अंग्रेज काँपते थे। जंगे आजादी के कई आंदोलनों में जेल गये। कांग्रेस के बड़े लीडरों में शुमार होते थे। देहांत तिथि मालूम न हो सकी।

डॉक्टर शौकतुल्लाह अंसारीः—

ये गाजीपुर के रहने वाले और डॉक्टर मुख़्तार अहमद अंसारी के दामाद और भांजे थे, आजादी के कई आंदोलनों में जेल गए। 26 दिसंबर 1972 को दिल्ली में देहांत हुआ और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कब्रिस्तान में दफ़न किए गए।

हकीम मोअज्जम अब्बासीः—

ये गाजीपुर जनपद के रसूलपुर बहादुरगंज के रहने वाले थे, वह मशहूर हकीम थे और हिकमत में उनका बड़ा नाम था, गांव—देहातों में उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ भाषण देने के लिए बुलाया जाता था, इस तरह वह अंग्रेजी सरकार के खिलाफ आवाज़ बुलंद किये हुए थे। उन्होंने आजादी के बाद कोई पेंशन न ली। लंबी उम्र पाई और संभवतः सन 1990 में देहांत हुआ।

हाफिज रहीम दाद खानः—

गाजीपुर जनपद के महेंद गांव के रहने वाले थे, ख़िलाफत आंदोलन में जेल गए, 1935 में देहांत हुआ और आजादी का सूरज न देख पाए।।

सईद खानः—

गाजीपुर जनपद के महेंद गांव के रहने वाले थे, 1921 में जेल की सजा काटी, सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल रहे, 1926 में कलकत्ता पुलिस ने उन्हें गोली से उड़ा दिया और वहीं गोबरा के कब्रिस्तान में दफन किए गए।

मौलवी रशीदुद्दीनः—

गाजीपुर शहर के जेरकिला के रहने वाले थे, जंगे आजादी में जेल गए। 1967 में देहांत हुआ। उपरोक्त में कुछ नामों का जिक्र इसलिए किया गया कि उन्हें गुमनामी की कोठरी से निकालकर शोहरत के मैदान में लाया जाय। मेरे सामने अभी ऐसे गुमनाम और कम मशहूर स्वतंत्रता सेनानियों की फेहरिस्त है कि एक किताब तैयार हो जाय। चूंकि पत्रिका में लेख छापा जाना है तो कुछ नामों का वर्णन करके इसी पर बस किया जाता है।।

❖❖❖

इतिहास गवाह है

इं0 जावेद इक़बाल

अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में हिन्दू–मुस्लिम रिश्तों में दराड़ डालने का काम बड़ी होशियारी से किया। इसके लिए उन्होंने सुनियोजित ढंग से इतिहास की पुस्तकें लिखवाईं। उन्होंने सत्ता पर अधिकार मुसलमानों से छीना था और उन्होंने मुस्लिम शासनकाल में हिन्दू–मुस्लिम एकता और भाईचारे के बे मिसाल नमूने देखे थे। उन्होंने देखा था कि मुसलमान बादशाहों के दरबार में हिन्दू दरबारियों, मंत्रियों, सेनापतियों और अधिकारियों का कैसा दबदबा था। ज़ाहिर है कि इतने बड़े मुल्क में हिन्दुओं की बहुसंख्यक आबादी पर शासन केवल मुसलामानों के बल पर करना असंभव था। यदि वे दमन की नीति पर अमल करते तो मुक़ामी हिन्दू राजा महाराजा उनके विरोध में खड़े हो जाते। मुस्लिम शासक जो शुरू में बाहर से आए थे केवल शासक थे, वे धर्म प्रचारक नहीं थे, उनका मकसद केवल हुकूमत करना था, यही वजह है कि जब भी कोई दूसरा मुस्लिम शासक भारत आया तो पहले वालों ने उस से जंग की, कभी आने वाले को खदेड़ा और कभी खुद खदेड़े गए। इसके लिए उन्हें मुकामी हिन्दू राजाओं की मदद लेना ज़रूरी होता था। लिहाजा हमेशा उनकी यही नीति रही कि मुकामी हिन्दू जनता को अपने पक्ष में रखने के लिए उन्हें खुश रखा जाए, उनकी आस्था और उनके धार्मिक गतिविधियों में दखल अंदाजी न की जाए। इसी नीति के तहत मुस्लिम शासकों ने हमेशा ही यहां के मंदिरों को जागीरें अलाट करीं ताकि मंदिरों की देख रेख, महंतों और पुजारियों के वेतन इत्यादि उन जागीरों की आमदनी से पूरे किए जा सकें। इस किस्म के फरमान आज भी अनेक मंदिरों में सुरक्षित हैं। अलबत्ता वह सभी दस्तावेज फारसी जबान में होने के कारण आजकल के अवाम की पहुंच से बाहर हैं। आज़ादी के बाद मुल्क की सरकारी जबान हिंदी हो जाने के कारण वर्षों तक बच्चों को वही इतिहास पढ़ाया गया जो अंग्रजों ने हिन्दुओं के दिलों में मुसलमानों के खिलाफ नफरत के बीज बोने के मक़सद से लिखा था, मगर वर्तमान में हिन्दुत्व के कट्टरपंथी इतिहासकारों ने तो उसमें कुछ और ही नमक मिर्च मिला कर अवाम को भ्रमित करने का सफल प्रयास किया है। फिर भी हिन्दू समाज में कुछ ऐसे इंसाफ पसंद विद्वान हुए हैं जिन्होंने इस विषय पर ईमानदारी से अपने अध्ययन की रोशनी में हक़ीक़तों पर से पर्दा उठाया है। और अवाम के सामने मुस्लिम शासकों की निष्पक्ष उदारता और दरियादिली की नीतियों को पेश करके समाज में एकता और भाईचारे का माहौल बनाने की कोशिश की है। ऐसे ही लोगों में एक नाम श्री बी एन पांडे का है। श्री बी एन पांडे गांधी वादी विचारधारा के प्रसिद्ध इतिहासकार होने के साथ साथ दो प्रांतों के राज्यपाल भी रह चुके थे।

अब हम संक्षेप में भारत के मुस्लिम शासकों की नीतियों और शाही फरमानों को नमूने के बतौर पेश कर रहे हैं जिन का उल्लेख श्री बी एन पांडे ने अपनी शोध पुस्तक "भारत में धार्मिक एकता की परंमपरायें" में विस्तार पूर्वक किया है।

अकबर बादशाह की सेना के सेनापति राजा मानसिंह थे और सेना के अधिकांश सिपाही राजपूत थे। यह इस बात का सबूत है कि अकबर को हिन्दुओं पर पूर्ण विश्वास था और हिन्दुओं को मुस्लिम शासक से कोई बैर नहीं था।

दूसरी तरफ राणा प्रताप के सेनापति हकीम खां सूर थे। जालौर के ताज खां भी एक हजार पठान सैनिकों के साथ राणा प्रताप की सहायता के लिए हल्दी घाटी गये थे। यह इस बात का सबूत है कि उस समय की जंगें राजनैतिक कारणों से लड़ी जाती थीं, धार्मिक प्रतिद्वंद्विता से उनका

कोई ताल्लुक नहीं होता था।

औरंगजेब को खास तौर पर हिन्दू विरोधी के रूप में जाना जाता है जबकि उसने अनेक शाही फरमानों के जरिए मुल्क के बहुत से मंदिरों को जागीरें अलाट की थीं। जिन में से कुछ मशहूर मन्दिर यह हैं, उज्जैन का महाकाल मंदिर, चित्रकूट का बालाजी मंदिर, गोहाटी का कामाख्या मंदिर, गिरनार का जैन मंदिर इत्यादि, इन मंदिरों में आज भी शाही फरमान सुरक्षित हैं। औरंगजेब की तरफ़ से बंगाल के वायसराय मुर्शिद अली खाँ ने अपने वित्त विभाग के सभी अधिकारी हिन्दू ही नियुक्त किए थे। बंगाल के हिन्दुओं को कभी यह महसूस नहीं हुआ कि वह किसी दूसरे धर्म के शासक के अधीन काम कर रहे हैं।

औरंगजेब ने शिवाजी के पोते साहू की धार्मिक शिक्षा का ऐसा ध्यान रखा कि हिन्दू पंडितों की नियुक्ति इस काम के लिए की गई।

औरंगजेब के एहसानों की वजह से साहू के दिल में औरंगजेब की मुहब्बत घर कर गई थी, जब औरंगजेब का देहान्त हुआ तो गम से निढाल साहू जनाज़े के साथ खुल्दाबाद तक गया और कबर में मिट्टी देते समय उसकी आंखें आंसुओं से भीग रही थीं।

टीपू सुल्तान के बारे में श्री बी एन पांडे ने लिखा है कि वह हर साल 156 मन्दिरों को भेंट सामग्री भेजा करता था। टीपू सुल्तान का सेनापति कृष्ण राव एक ब्राह्मण था और उसका प्रधानमंत्री भी पूणिया नाम का एक ब्राह्मण ही था।

श्रंगेरी मठ के जगदगुरू शंकराचार्य और टीपू सुल्तान के बीच प्रेम पूर्वक पत्र व्यवहार हुआ करता था, कन्नड़ भाषा में एक दर्जन से अधिक पत्र इस के गवाह हैं।

सिकन्दर लोदी ने अपने दरबार में ऊंचे पदों पर भर्ती के लिए हिन्दुओं को खास तौर पर आमंत्रित किया उसने अपने दरबारियों से पूछा क्या कोई ऐसा हिन्दू है जो फारसी भाषा जानता हो, जवाब में उस समय कोई ऐसा हिन्दू न मिला तो उसने ब्राह्मणों क्षत्रियों और कायस्थों को फारसी पढ़ने का हुक्म दिया, लेकिन सबने यह कहकर माफी चाही कि हमें अपने कामों से ही फुरसत नहीं मिलती, केवल कायस्थों ने फारसी पढ़नी शुरू कर दी। चुनांचे कायस्थों को राज्य के कार्यों में जगह मिलनी शुरू हुई, उनकी तरक्की को देख कर अन्य लोगों ने भी फारसी भाषा सीखी और फिर लोदी शासन में हिन्दू कर्मचारीयों की संख्या बढ़ने लगी।

एक मशहूर इतिहासकार जान मैलकम ने अपनी राबर्ट क्लाइव नाम की किताब में लिखा है कि सिकन्दर लोदी के शासनकाल में भूमि विभाग और वित्त विभाग का पूरा इंतजाम और देश के गृह विभाग का नियंत्रण पूरी तरह हिन्दुओं की देख रेख में था। खज़ाने का उच्च अधिकारी भी हिन्दू ही होता था जो आमतौर पर मुख्यमंत्री या उपमुख्यमंत्री के दर्जे का होता था।

अहमद शाह ने सन् 1754 ई० में अकबराबाद प्रांत के अछनेरा कस्बे के किसानों और जागीरदारों के नाम नरसिंह मंदिर के लिए एक फरमान जारी किया था जो इस तरह था, इस हुक्म नामे के जरिए सत्रह बीघा ज़मीन बिना लगान मंदिर के पुजारी शीतल दास बैरागी के नाम धार्मिक कार्यों के लिए दी जाती है, जिससे वह मंदिर की ज़रूरतों को पूरा कर सके। इस ज़मीन की मालगुज़ारी बैरागी जी के लिए मंजूर की जाती है, जिससे वह धार्मिक संस्कारों के लिए ज़रूरी चीजें खरीद सकें। अछनेरा बाजार के चौधरी को यह मालूम होना चाहिए कि हर एक गाड़ी अनाज पर पाव सेर ठाकुर जी के लिए रख लिया जाए और वह बैरागी जी को ज़रूर मिले।

एलफिंस्टन ने मुस्लिम शासकों के बारे में लिखा है कि उनके शासन काल में हिन्दुओं के मंदिरों और धर्मशालाओं की हिफाजत का इंतजाम किया जाता था। वृंदावन, गोवर्धन और मथुरा के मंदिरों को शाही खज़ाने से वजीफा दिया जाता था। मथुरा जिले के गोवर्धन में हरिदेव जी का मंदिर है यह 1500 ईस्वी में बना था,

शेष पृष्ठ ....35..पर

सीरते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुकम्मल अमल की ज़रूरत

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी

रबीउल अव्वल के मुबारक मौके पर ईदमीलादुन्नबी की महफिलें सजती हैं बड़े बड़े वक्ताओं के जोशीले भाषण और तक़रीरें होती हैं नातिया मुशायरों का आयोजन होता है और पूरी रात यह सिलसिला जारी रह कर सुब्ह की अज़ान पर समाप्त होता है, लेकिन पूरी रात जाग कर लोग जब अपने घरों को लौटते हैं तो यह नहीं बता सकते कि हुजूर सल्ल0 की घरेलू एवं सामाजिक ज़िन्दगी कैसी थी, वह मेराज का वाकिया बयान कर सकते हैं, गज़्व–ए– उहद की तफ़्सीलात बयान कर सकते हैं आप सल्ल0 के मोजिजात पर रोशनी डाल सकते हैं, गारे हिरा में आपकी इबादत की मंजरकशी कर सकते हैं, मक्के से मदीने हिजरत की रूदाद बयान कर सकते हैं इसी प्रकार वह आप सल्ल0 की बहुत सारी बातें बता सकते हैं, लेकिन आप सल्ल0 की घरेलू एवं सामाजिक ज़िन्दगी के बारे में वह बिल्कुल अनभिज्ञ और खामोश नज़र आते हैं जब कि आप सल्ल0 की जीवनी का वह भाग जो घरेलू एवं सामाजिक जीवन से संबंधित है, मानव जीवन में उसका बहुत महत्व है, इबादात के मामले में आपकी जीवनी वास्तव में हमारी पूरी रहनुमाई करती है बल्कि इबादात को काबले कबूल बनाने में सीरत का बुनियादी किरदार है, लेकिन क्या आप सल्ल0 का सारा समय मस्जिदों में गुज़रा? क्या आप सल्ल0 मानव जीवन की ज़रूरियात से मुक्त थे जो हर एक को पेश आती हैं? क्या आप सल्ल0 ने अपनी ज़िन्दगी का ज़्यादा समय जंगलों और गारों में गुज़ारा जहाँ इन्सानों से वास्ता कम पड़ता है? अगर ऐसा होता तो कुर्आन की यह आयत ''तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 की ज़िन्दगी में बेहतरीन नमूना है'' बे माना हो कर रह जाती, वास्तव में आपकी ज़िन्दगी में वह समस्त मसायल पेश आये जो किसी भी इंसान को उम्र के किसी भी भाग में पेश आ सकते हैं। आप सल्ल0 का बचपन भी गुज़रा, जवानी भी गुज़री और जवानी के बाद का ज़माना भी गुज़रा, बचपन की ख्वाहिशात, जवानी की ज़रूरतें और जवानी के बाद के मसायल भी आपको पेश आये, रहन सहन और लेन देन के मामले में नबी सल्ल0 ने उम्मत के सामने एक मिसाल कायम की, और एक नमूना पेश कर के दिखा दिया, हमें इन नमूनों को भी सामने लाने की ज़रूरत है।

हम वुज़ू में, गुस्ल में, पानी पीने में, खाना खाने में सुन्नतों का एहतिमाम करते हैं क्योंकि हमारे प्यारे नबी ने यह सब सिर्फ बताया ही नहीं बल्कि करके दिखाया है लेकिन क्या हुजूर पाक सल्ल0 ने सिर्फ उन्हीं चीज़ों में हमारी रहनुमाई फरमाई है जो हमारी व्यक्तिगत जीवन से संबंध रखती हैं? और क्या आप सल्ल0 ने सिर्फ उन्हीं चीज़ों के सिलसिले में हमें हिदायात फरमाई हैं जिन्हें इबादात कहा जाता है?

क्या आप सल्ल0 ने घर में रहने के आदाब नहीं बताए? क्या आप सल्ल0 ने सड़क पर चलने का तरीक़ा नहीं बताया? क्या आप सल्ल0 ने रास्ते पर खड़े रहने वालों पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ नहीं डालीं? क्या पड़ोसियों के साथ अच्छे व्यवहार की तालीम आप सल्ल0 ने नहीं दी? क्या रास्ते से तकलीफ़ पहुँचाने वाली चीज़ हटाने को सदक़ा (सवाब का काम) नहीं कहा? क्या किसी बीमार की इयादत की फ़ज़ीलत के सिलसिले में ज़बाने नबूवत खामोश है? क्या मुसलमान भाई से मुस्कुरा कर मिलना अज्र व सवाब का सबब नहीं है? क्या विनम्रता, सहन शीलता, शालीनता उच्च कोटि के नबवी सिफात एवं गुण नहीं हैं?

माँ–बाप के साथ सदा अच्छे बरताव की ताकीद किसने फरमाई? बीवी के हुकूक अदा

करने पर किसने ज़ोर दिया? अनाथों, असहायों और विधवावों की देख भाल करने पर किसने खुशखबरी सुनाई? अमानतदार कारोबारी के लिए प्रलोक की गर्मी में अल्लाह के अर्श के साये का वादा किसने किया, गीबत, चुगल खोरी, इल्जाम तराशी और ऐब लगाने को बदतरीन गुनाह किसने करार दिया? झूठ ख्यानत, और वादा खिलाफी को निफ़ाक़ (पाखण्ड) की अलामतों में किसने शुमार किया?

ज़रा सोचिए! आप सल्ल0 की ज़िन्दगी में खुशी के मौक़े भी आये और गम के भी, आप सल्ल0 ने अपनी चहेती बेटियों को दुलहन बना कर विदा भी किया और अपने लख्ते जिगर हज़रत इब्राहीम रज़ि0 को अपने हाथों से क़ब्र में भी उतारा, आप सल्ल0 ने मैदाने जंग में इस्लामी लश्कर को आगे बढ़ते भी देखा और पीछे हटते हुए भी, सुलह के वाक़ियात भी आप सल्ल0 की ज़िन्दगी में पेश आए और जंग के भी, आपने जान छिड़कने वाले सहाबा रज़ि0 की मुहब्बत भी देखी और खून के प्यासे दुश्मनों की दुश्मनी भी, आप सल्ल0 ने माफ करके भी दिखाया और चेतावनी दे कर भी, आप सल्ल0 ने बचाव भी किया, और अटेक भी, आप सल्ल0 ने खुद भूखे रह कर दूसरों को खिलाने का सबक दिया, आप सल्ल0 ने अपने रिश्तेदारों को वंचित रख कर दूसरों को नवाज़ने का नमूना पेश किया, पसीना सूखने से पहले मज़दूर को उसकी मज़दूरी देने का उपदेश दिया, महिलाओं के साथ विन्रमता अपनाने का आदेश दिया, अमीर (हाकिम) की आज्ञाकारिता अनिवार्य कर दी।

आप सल्ल0 की मज्लिस में सिर्फ इल्म, अमानतदारी हया सच्चाई, सब्र पर बातें होती थी, किसी की गीबत, किसी पर इल्ज़ाम न लगाया जाता था, वहां हर बड़ा सम्मानीय था और हर छोटा कृपा पात्र।

जरा आप सल्ल0 के घर पर नज़र डालिए सिर्फ एक कमरा है और वह भी इतना तंग की आप सल्ल0 नमाज़ पढ़ते तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अपने पाँव नहीं फैला सकती थीं इसीलिए हदीसों में आता है कि जब तक आप सल्ल0 कियाम में या रुकूअ़ में होते तो हज़रत आयशा रज़ि0 पाँव फैलातीं और जब सज्दे में जाते तो हज़रत आयशा रज़ि0 अपना पाँव समेट लेतीं, तब आप सजदा फरमाते, इतना तंग मकान और इतनी तंग आरामगाह थी, घर में फर्नीचर के तौर पर सिर्फ दो चीजें थी एक तख्त और एक कुर्सी, वह भी बहुत मामूली।

दरवाजे पर पर्दा ज़रूर था लेकिन वह भी बहुत मामूली, वह मकान की ज़ीनत और साज सज्जा बढ़ाने के लिए नहीं सिर्फ इसलिए कि अचानक दरवाज़ा खुलने पर बेपरर्दगी न हो, और अगर दरवाज़े पर कोई खड़ा हो जाये तो सामना न हो।

मस्जिदे नबवी में आप सल्ल0 आराम फरमाँ हैं आपके जिस्मे मुबारक के नीचे खजूर की एक चटाई है, न सर के नीचे कोई तकिया है न चेहरे अनवर के नीचे कोई चादर, खजूर की इस सख़्त और खुर्दरी चटाई के निशानात आप सल्ल0 के चेहरे पर साफ नज़र आ रहे हैं हज़रत उमर रज़ि0 आपको इस हाल में लेटा देखते हैं तो आँखों में आँसू भर आते हैं और फरमाते हैं! ऐ अल्लाह के रसूल! आप अल्लाह के महबूब हो कर इतनी सख्त और खुर्दुरी चटाई पर लेटे हैं कि आपके चेहरे पर निशानात पड़ गये हैं जब कि कैसर–किसरा (रूम व ईरान के बादशाहों की उपाधि) नर्म व मखमली गद्दों पर आराम कर रहे हैं तो आप सल्ल0 ने फरमायाः उनके लिए सिर्फ दुनिया है और हमारे लिए आखिरत।

घर में आप सल्ल0 का वक़्त कैसे गुज़रता था? वह भी हज़रत आयशा रज़ि0 की ज़बानी सुनिए– फरमाती हैंः आप सल्ल0 सख्त मिज़ाज शौहर की तरह नहीं थे, अपने कपड़े खुद ही सी लेते, खुद ही अपनी चप्पल टाँक लेते, खुद बकरी का दूध दूह लिया करते थे, और घर में आप सल्ल0 उसी प्रकार का काम काज कर लेते थे जिस प्रकार दूसरे तमाम मर्द अपने घरों मे काम करते हैं, आप सल्ल0 फरमाया करते थे, तुममें सबसे

बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे बेहतर हो, और मैं अपने घर वालों के लिए तुम सबसे बेहतर हूँ।

बच्चों के साथ आप सल्ल0 का व्यवहार इतना प्रेमपूर्ण होता था कि बच्चे आप सल्ल0 के आशिक हो जाते थे, बच्चों से आप सल्ल0 प्यार फरमाते, खुद ही उनको सलाम करते, उनके सरों पर हाथ फेरते, उनके मध्य कभी कभी मुकाबला करा देते, जब आप सल्ल0 सफ़र से वापस तशरीफ लाते तो घर के बच्चे आप सल्ल0 का इस्तेकबाल करने दौड़ते, आप किसी को प्यार करते, किसी को अपनी सवारी पर पीछे बैठा लेते, किसी को हाथों पर उठा लेते और गोद में ले लिया करते।

गरीबों कमज़ोरों बीमारों से मिलने आप सल्ल0 खुद जाते, और उनको तसल्ली देते, उनकी तकलीफें दूर करने की पूरी कोशिश करते, उनकी परेशानियों और तकलीफों पर अल्लाह की ओर से अज्र व सवाब की उम्मीद दिला कर उनके एहसासात को बदलने की कोशिश करते।

आप सल्ल0 ने उस वलीमे को बहुत बुरा वलीमा कहा है जिस वलीमे में अमीरों को तो दावत दी जाये और गरीबों और कमज़ोरों को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए, आप सल्ल0 ने फरमाया कि मैं मिस्कीनों से मुहब्बत करता हूँ।

इसी प्रकार तायफ के सफर के हालात पढ़िए, आप सल्ल0 आगे हैं और पीछे कुफ़्फ़ार के लगाए हुए शरपसंद औबाश लड़के, पत्थर आप पर बरसाये जा रहे हैं, जुम्ले आप पर कसे जा रहे हैं आपके पाँव मुबारक खून से लतपत हो चुके हैं, दिल की कैफियत का तो पूछना ही क्या, लेकिन ज़बान पर ऐसा क़ाबू और जज़बात पर ऐसा कंट्रोल कि अक़्ल हैरान रह जाए, न ज़बान से कोई सख़्त लफ़्ज़ निकलता है और न बददुआ के लिए हाथ उठता है फरिश्ते मुंतजिर हैं कि इजाजत हो तो पहाड़ों को मिला कर इन शरकशों का सुर्मा बना दिया जाए, लेकिन इस मौक़े पर भी ज़बान मुबारक से मुहब्बत में डूबे शब्द ही निकलते हैं ''ऐ अल्लाह मेरी कौम को हिदायत अता फरमा वह नहीं जानती''।

मक्के पर विजय पताका लहराया जा रहा है, दुश्मन से बदला लेने का इससे बेहतर कोई मौक़ा नहीं, तलवारें इशारे की मुंतजिर हैं, कब से आरज़ू थी कि अल्लाह व रसूल के नाफरमानों के सर कलम करने का मौका हाथ आये, लेकिन ऐलान होता है आम माफी का, तलवारों का सर झुक जाता है और उनको नियाम में वापस आना पड़ता है।

और आगे बढ़िए, तलवार को छोड़िए, तलवार तो बड़ी चीज़ है, आप सल्ल0 के विरोधी व जानी दुश्मन भी आज तक यह भी साबित न कर सके कि आप सल्ल0 के किसी दुश्मन को आप सल्ल0 के किसी शब्द से तकलीफ हुई है। अपने और पराये सबका इस बात पर इत्तेफाक़ है कि न आप सल्ल0 ने किसी नौकर को मारा, न किसी महिला पर हाथ उठाया, और न किसी बच्चे को डाँटा, इंसान को छोड़िए जानवरों तक से आप सल्ल0 ने अच्छा बरताव करने का हुक्म दिया, दूध दूहने वाले से कहा कि अपने नाखुन काट लिया करो ताकि दूध दूहते समय वह जानवर के थन में न धसें, इसी प्रकार दूसरे जानवरों के सथ भी नर्मी करने का हुक्म दिया और फरमाया इनके साथ की जाने वाली ज़ियादतियों पर भी कयामत में सवाल होगा।

आज के इस समाज में सीरत पाक के इन नमूनों को भी सामने लाने की ज़रूरत है, और जब तक ज़िन्दगी के हर मैदान में सीरते रसूलुल्लाह सल्ल0 के नमूनों को नहीं अपनाया जायेगा उस वक़्त तक मुकम्मल दीन हमारी ज़िन्दगी में नहीं आ पायेगा इसी को क़ुर्आन ने कहा है ''दाखिल हो जाओ ईमान में पूरे–पूरे'' दूसरी जगह इरशाद है: तुम को हुज़ूर सल्ल0 की ओर से जो भी आदेश मिले उसको पूरा करो और जिस काम से आप सल्ल0 ने मना फरमाया रुक जाओ, यही दरअस्ल रबीउल अव्वल का पैग़ामा है।

❖❖❖

जंगे आज़ादी में मुस्लिम हुकमा का किरदार

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

जिस तरह हिन्दुस्तान की जंगे आज़ादी में मुस्लिम उलमा ने अहम किरदार अदा किया उसी तरह बहुत से मुस्लिम हुकमा ने भी अपनी जान, माल, इज़्ज़त और आज़ादी को वतन के लिए क़ुर्बान किया। उनमें से बहुत से हकीम ऐसे थे जिन्होंने अंग्रेज़ी हुकूमत के ख़िलाफ़ आवाज़ें बुलन्द कीं, आज़ादी के इन्क़िलाब में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया, और इस जुर्म में जेलों में क़ैद की मुसीबतें भी बर्दाश्त करनी पड़ीं। उनकी क़ुर्बानियाँ हमारी तारीख़ का एक रौशन बाब हैं।

हिन्दुस्तान की तहरीके आज़ादी में मुस्लिम हकीमों ने तिब्बी ख़िदमात के साथ–साथ सियासी तहरीकों की क़यादत भी की, माली मदद भी की और नज़रियाती मोर्चे पर कभी न भुलाया जाने वाला किरदार अदा किया। इन हुकमा ने न सिर्फ़ अंग्रेज़ी हुकूमत की मुख़ालिफ़त की, बल्कि बरतानवी सामराज की तरफ़ से मश्रिक़ी तरीक़–ए–इलाज यानी यूनानी तिब और आयुर्वेद तरीक़–ए–इलाज को ख़त्म करने की साज़िशों का भी ख़ूब डट कर मुक़ाबला किया।

तहरीके आज़ादी में अहम किरदार अदा करने वाले बहुत से हुकमा गुज़रे हैं, जिनमें से कुछ को यहाँ बयान किया जा रहा हैः

हकीम अजमल ख़ानः–

हकीम अजमल ख़ान देहली के ख़ानदाने शरीफ़ी के चश्म व चिराग़ थे, हकीम अजमल ख़ान तहरीके आज़ादी की सफ़े अव्वल के रहनुमा थे और ''मसीहुल मुल्क'' के नाम से मशहूर हुए, उन्होंने अंग्रेज़ों की तरफ से देसी अतिब्बा और वैधों पर पाबन्दी लगाए जाने की कोशिशों के ख़िलाफ़ 1906 में ''तिब्बी कान्फ्रेंस'' क़ायम की और बतौर एहतेजाज अंग्रेज़ी हुकमत की तरफ़ से दिया गया ख़िताब ''हाज़िक़ुल मुल्क'' लौटाने के साथ–साथ दूसरे तमग़े भी वापस कर दिये। जब उन्होंने बरतानवी ख़िताब वापस किया तो अवाम ने उन्हें ''मसीहुल मुल्क'' का लक़ब देते हुए देहली का ''बेताज बादशाह'' क़रार दिया। वह गाँधी जी के क़रीबी साथियों में से थे, उनकी ही अध्यक्षता में कांग्रेस ने सिविल नाफ़रमानी की तहरीक को मन्ज़ूरी दी थी। उन्होंने जामिआ मिल्लिया इस्लामिया और आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी तिब्बिया कॉलेज देहली की बुनियाद भी रखी।

हकीम अजमल ख़ान ने 1921 में इंडियन नेश्नल कांग्रेस और ख़िलाफ़त तहरीक की अध्यक्षता की। वह एक ऐसी अकेली शख़्सियत थे जो कांग्रेस, मुस्लिम लीग और ख़िलाफ़त कमेटी के एक ही वक़्त में अध्यक्ष रहे। उन्होंने बरतानवी हुकूमत के ख़िलाफ़ असहयोग आन्दोलन *(Non-Cooperation Movement)* में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और बरतानवी सामराजी पॉलीसियों के ख़िलाफ़ वैधों और हकीमों को एक प्लेटफ़ार्म पर इकट्ठा किया। हकीम अजमल ख़ान का इन्तिक़ाल 1927 में हुआ।

हकीम अब्दुल मजीद एहसानः–

हकीम अब्दुल मजीद एहसान महाराष्ट्र के इलाक़े मालेगाँव से ताल्लुक़ रखते थे, इनकी पैदाईश सन् 1865 में हुई। यह अरबी, फ़ारसी और उर्दू के मशहूर आलिम व शायर भी थे। इन्होंने जंगे आज़ादी के दौरान अंग्रेज़ी पॉलीसियों के ख़िलाफ़ अपने इलाक़े में मुसलमानों को मुत्तहिद व मुनज़्ज़म किया। मालेगाँव ;महाराष्ट्रद्ध में जब तहरीके ख़िलाफ़त अपनी उठान पर थी तो यह उसके अध्यक्ष बनाए गये। 1921 के इन्क़िलाबी हंगामों के बीच इन्होंने अंग्रेज़ सरकार की आँखों में आँखें डाल कर क़यादत की, जिसके जुर्म में अंग्रेज़ हुकूमत ने इन्हें गिरफ़्तार कर लिया और काला पानी की सख़्त तरीन सज़ा सुनाई।

हकीम महमूद ख़ानः–

यह देहली के मुमताज़ तिब्बी घराने से ताल्लुक़ रखते थे। यह मशहूर हकीम अजमल ख़ान के वालिद और अपने दौर के

मशहूर नब्ज़ शनास ;माहिर हकीम थे। 1857 की जंगे आज़ादी के दौरान इनका मतब ;क्लीनिक और घर तहरीके ख़िलाफ़त के रहनुमाओं की मुलाक़ातों का गढ़, इन्क़िलाबियों के लिए पनाहगाह और ख़ुफ़िया मुलाक़ातों का सेन्टर बना रहा। इन्होंने मुजाहिदीने आज़ादी का न सिर्फ़ मुफ़्त इलाज किया बल्कि आज़ादी के इन्क़िलाब को बड़े पैमाने पर माली मदद भी पहुँचाई, जिसकी वजह से वह अंग्रेज़ों की आँख का काँटा बने रहे।

हकीम नवाब महमूद ख़ान बिजनौरीः–

यह बिजनौर के नवाब और माहिर तबीब थे। 1857 के इन्क़िलाब के दौरान इन्होंने बिजनौर में बाक़ायदा तौर पर फ़ौज तैयार करके अंग्रेज़ ईस्ट इंडिया कम्पनी के ख़िलाफ़ खड़े होकर अमली जंग लड़ी और बिजनौर से अंग्रेज़ी अफ़सरों को भागने पर मजबूर करके वहाँ अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। सर–सय्यद अहमद ख़ान ने अपनी किताब ''तारीख़े सरकशी–ए–ज़िला बिजनौर'' में इनके इस इन्क़िलाब और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ सख़्त लड़ाई का तफ़सीली तज़किरा किया है।

हकीम हाफ़िज़ अब्दुल मजीद, बानी हमदर्द दवाख़ानाः–

हकीम हाफ़िज़ अब्दुल मजीद, हकीम अजमल ख़ान के शागिर्द थे और स्वदेशी तहरीक (अंग्रेज़ी सामानों के बाइकॉट और देसी चीज़ों को बढ़ावा देने) के बहुत बड़े हिमायती थे, उन्होंने अंग्रेज़ी दवाओं के मुक़ाबले में देसी जड़ी–बूटियों की सस्ती दवाओं की शक्ल में पहचान कराई और इसके ज़रिये बरतानवी तिजारती पैठ को बड़ा धचका पहुँचाया। 1906 में इन्होंने देहली में हमदर्द की बुनियाद रखी और ज़माने का मशहूर शरबत ''रूह अफ़ज़ा'' ईजाद किया, जो आज तक सारी दुनिया में बहुत शौक़ से पिया जाता है।

हकीम अब्दुल हमीदः–

हकीम अब्दुल हमीद, हकीम हाफ़िज़ अब्दुल मजीद के बेटे थे। इन्होंने छोटी उम्र में ही अपने वालिद की वफ़ात के बाद काम संभाला। तहरीके आज़ादी और हिन्दुस्तान के बटवारे के ख़तरनाक दौर में इन्होंने मज़लूमों की तिब्बी और माली मदद की और बाद में जामिआ हमदर्द जैसे बड़े तालीमी इदारे क़ायम करके मुल्क की तामीर व तरक़्क़ी में हिस्सा लिया।

डॉक्टर हकीम वज़ीर ख़ानः–

डॉक्टर वज़ीर ख़ान अंग्रेज़ी दौर के ऐसे हकीम थे जो तिब्बे यूनानी के साथ–साथ अंग्रेज़ी जर्राही (सर्जरी) के भी माहिर थे। 1857 की जंगे आज़ादी में इन्होंने आगरा से इन्क़ेलाबी तहरीक का झंडा बुलन्द किया और अल्लामा फ़ज़्ले हक़ ख़ैराबादी के साथ मिल कर देहली की जामा मस्जिद से अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ ''जिहाद के फ़तवे'' पर दस्तख़त किये। इन्होंने बख़्त ख़ान की इन्क़ेलाबी फ़ौज के साथ मिल कर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ मैदाने जंग में अमली लड़ाई भी लड़ी।

हकीम सय्यद मोहम्मद ज़ामिनः–

देहली के एक और मशहूर हकीम जो 1857 की जंगे आज़ादी के दौरान बहादुर शाह ज़फ़र के क़रीबी साथियों और मुजाहिदीन के ख़ास इलाज करने वाले थे। अंग्रेज़ी फ़ौज ने जब देहली पर क़ब्ज़ा कर लिया तो उन्होंने तहरीके आज़ादी की हिमायत के जुर्म में हकीम ज़ामिन को सख़्त तकलीफ़ें दीं और उनका मतब (क्लीनिक) लूट लिया।

हकीम अब्दुल हलीमः–

हकीम अब्दुल हलीम का ताल्लुक़ लखनऊ के मशहूर तिब्बी ख़ानदान ''अज़ीज़ी'' से था और यह हकीम अब्दुल अज़ीज़ के बेटे थे। हकीम अब्दुल हलीम ने तहरीके ख़िलाफ़त और गाँधी जी की असहयोग आन्दोलन *(Non-Cooperation Movement)* में लखनऊ से बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ एहतेजाज करते हुए इन्होंने अंग्रेज़ हुकूमत की दी हुई जागीर और सहूलतों को ठुकरा दिया था। इनका मतब इन्क़िलाबियों का सियासी बैठका बना रहता था।

हकीम मुहम्मद हसन क़रशीः–

यह हकीम अजमल ख़ान के ख़ास शागिर्दों में से थे। इन्होंने पंजाब में यूनानी तिब को बचाने और अज़ादी की तहरीक को मज़बूत करने के लिए दिन–रात कोशिशें कीं। तहरीके ख़िलाफ़त के दौरान चन्दा जमा करने और अंग्रेज़ी कपड़ों के बाइकॉट की मुहिम में बड़ा अहम किरदार अदा

किया। उनका मतब आज़ादी के मतवालों का सेन्टर हुआ करता था। अल्लामा इक़बाल के साथ इनका क़रीबी ताल्लुक़ था और वह उनके आख़िरी अय्याम में बाक़ायदगी से उनकी अयादत और इलाज भी किया करते थे।

तहरीके आज़ादी में मुस्लिम हुकमा का किरदार सिर्फ़ मतब, इलाज और दवाओं तक महदूद नहीं था, बल्कि वह इन्क़िलाबी मूवमेन्ट के बाक़ायदा कमाण्डर थे। अंग्रेज़ों ने देसी तिब (यूनानी और आयुर्वेदिक) को ख़त्म करने की भरपूर कोशिश की क्योंकि उन्हें मालूम था कि यह अतिब्बा सीधे तौर पर अवाम से जुड़ने वाले और लोगों में आज़ादी का शौक़ पैदा करने वालों में से हैं।

इसके अलावा हुकमा के मतब ख़ुफ़िया सियासी सेन्टर के तौर पर इस्तेमाल हुआ करते थे। अंग्रेज़ों की ख़ुफ़िया पुलिस (CID) मुस्लिम लीग, कांग्रेस या ख़िलाफ़त कमेटी के दफ़्तरों पर कड़ी निगाह रखती थी, लेकिन वह बीमारों के इलाज के बहाने मतब में आने वालों पर शक नहीं कर पाते थे। हुकमा के मतब दरअस्ल इन्क़िलाबियों के ख़ुफ़िया हेड–क्वार्टर हुआ करते थे जहाँ तहरीके आज़ादी की हिकमते अमली *(strategy)* तय होती थी।

तहरीके आज़ादी को मज़बूती देने के लिए हुकमा ने अंग्रेज़ी दवाओं *(Allopathy)* के बाइकॉट की अपील की। उन्होंने अवाम को बताया कि अंग्रेज़ी दवाएं ख़रीदना बरतानवी ख़ज़ाने को भरना और अपने मुल्क को ग़ुलामी में ढकेलने जैसा है। देसी जड़ी–बूटियों और देसी दवाओं को बढ़ावा देकर उन्होंने अंग्रेज़ी दवाई कम्पनियों को करोड़ों का नुक़सान पहुँचाया।

इसी सिलसिले में हकीम अजमल ख़ान और दूसरे हकीमों ने देसी तरीक़–ए–इलाज को बचाने के लिए हिन्दू वैद्यों और मुस्लिम हुकमा को हिन्दू–मुस्लिम इत्तिहाद के तौर पर अपने साथ मिलाया। इस तिब्बी इत्तिहाद ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ हिन्दू–मुस्लिम एकता की ऐसी मिसाल क़ायम की जिसने सियासी मोर्चे पर भी अंग्रेज़ी हुकूमत की ''बाटो और राज करो'' की पॉलीसी को नाकाम बना दिया।

बहुत से मुस्लिम हुकमा को अंग्रेज़ी जेलों में एक लम्बे ज़माने तक तकलीफ़ें भी बर्दाश्त करना पड़ीं। अंग्रेज़ी हुकूमत आज़ादी के मतवालों को दबाने के लिए सख़्त से सख़्त चालें चला करती थी। हुकमा जो अवाम में अपना असर और पहचान रखते थे, उन पर ख़ास नज़र रखी जाती थी। उन्हें मामूली इल्ज़ाम पर गिरफ़्तार कर लिया जाता था, लम्बे ज़माने तक उन पर मुक़द्दमे चलाए जाते और अलग–अलग जेलों में क़ैद करके उन्हें ज़ेहनी व जिस्मानी तकलीफ़ें दी जाती थीं। जेलों में बंद हुकमा को अधूरी ख़ूराक, गंदे माहौल, सख़्त तकलीफ़ें, तिब्बी सहूलत की कमी और घर वालों से मुलाक़ात पर पाबन्दी जैसे मसायल का सामना करना पड़ता था। कई हकीमों को तन्हा क़ैद में रखा गया ताकि वह अवाम से मुलाक़ात न कर सकें। इसके बावजूद उन्होंने अपने हौसले पस्त नहीं होने दिये और बराबर आज़ादी की कोशिशें जारी रखीं।

बर्रे सग़ीर के जिन मुस्लिम हुकमा को गिरफ़्तार किया गया उन्होंने बरतानवी ज़ुल्म व सितम को हंसते–खेलते बर्दाश्त किया और अपने नज़रिये से अलग होने से इनकार कर दिया। इन हुकमा की क़ुर्बानियों का सबसे बड़ा सबक़ यह है कि क़ौमों की आज़ादी सिर्फ़ मैदाने जंग में नहीं बल्कि जेलों की अंधेरी कोठरियों से भी हासिल की जा सकती है। उन्होंने जिस्मानी तकलीफ़ों, बीमारी, भूख, तन्हाई और ज़ुल्म के बावजूद अपने वतन और क़ौम से वफ़ादारी का सुबूत दिया। उनके इस तरह अडिग रहने ने अवाम में आज़ादी के जज़्बे को और भी मज़बूत किया।

आज हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इन अज़ीम शख़्सियतों की क़ुर्बानियों को याद रखें, इनकी ख़िदमात को नई नस्ल तक पहुँचाएं और इनके किरदार से सब्र, दृढ़ता, वतन से मुहब्बत और समाज–सेवा का सबक़ हासिल करें। बरतानवी जेलों में हुकमा की बर्दाश्त की गई तकलीफ़ें इस हक़ीक़त की गवाह हैं कि आज़ादी की नेमत बेशुमार क़ुर्बानियों के बाद ही हासिल होती है, और इन क़ुर्बानियों को कभी भूलाया नहीं जा सकता।

❖❖❖

आज़ादी का जश्न और मुसलमान

मुहम्मद इक़बाल नदवी

भारत ने अंग्रेज़ी साम्राज्य से 15 अगस्त 1947 ई0 को आज़ादी हासिल कर ली, लगभग 79 साल हो गये, भारत के इतिहास में 15 अगस्त 1947 ई0 का दिन एक महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि लाखों लोगों ने अपने प्राणों की आहूति देकर इस देश को ब्रिटिश सरकार से आज़ाद कराया, भारत के लिए अपनी जान कुरबान करने वालों में जो योगदान मुस्लिम समुदाय का रहा है उसको इतिहास के पन्नों ने सुरक्षित रखा है परन्तु अब उस इतिहास को बदलने के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं जब कि वास्तविक्ता यह है कि अंग्रेज़ों से लोहा लेने का आग़ाज़ मुसलमानों ने किया और उनको इसके भयानक परिणाम भी भुगतने पड़े लेकिन आज़ादी के इन दीवानों ने अपने कदम पीछे नहीं हटाए जब यह कारवाँ आगे ही बढ़ता गया तब भारत में बसने वाले दूसरे समुदाय के लोग भी आगे बढ़े और फिर इस प्रकार यह एक ऐसा आन्दोलन बन गया जिसने अपनी मिट्टी और धरती की पवित्र छाती पर ब्रिटिश सरकार के नापाक कदम जमने नहीं दिए तथा उन्हें भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया, यदि कोई यह कहता है कि मुसलमानों का क्या योगदान है भारत को आबाद करने में तो उसे इतिहास पर गहरी दृष्टि डालनी चाहिए कि अगर मुस्लिम समुदाय ने जंगे आज़ादी का बिगुल ना बजाया होता तो शायद भारत की धरती ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्र न हो पाती और न ही यहां के चमन में आज़ादी के साथ चिड़िया चहचहा पाती।

1857 की लड़ाई जो अंग्रेज़ों के खिलाफ बहुत भयानक जंग थी उसका नेतृत्व आखिरी मुग़ल बादशाह बहादुर शाह ज़फर कर रहे थे इस युद्ध में हज़ारों मुस्लिम उलमा व अवाम तथा अन्य लोगों को अपनी जान की कुरबानी देनी पड़ी किन्तु युद्ध फिर भी अंग्रेज़ जीत गये बहादुरशाह ज़फर को गिरफ़्तार करके उनके दोनों बेटों के सर क़लम करके उनके सामने पेश किये गये खुद उनको काले पानी की सज़ा सुनाई गई फिर भी आज़ादी की यह ज्वाला भड़कती रही। अंग्रेज़ों ने इसके लिए सबसे बड़ा शत्रु मुसलमानों को माना तथा उनको पकड़ पकड़ कर मौत के घाट उतारा गया हम यह नहीं कहते कि भारत के दूसरे समुदाय के लोगों ने भाग नहीं लिया लेकिन अंग्रेज़ों से बगावत करने में पहल मुस्लिम समुदाय ने की। पंडित जवाहर लाल नेहरू, बल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, अब्दुल गफ़्फ़ार खान, मौलाना मोहम्मद अली जौहर, मौलाना हिफजुर्रहमान सेवहारवी जैसे अनेकों प्रमुख लोग थे जो भारत को आज़ाद कराने के लिए हर प्रकार की आहुति देने को तैयार थे। 1919 ई0 में जलियां वाला बाग की प्रसिद्ध घटना है जिसमें "अंग्रेज़ जनरल डायर ने क्रान्तिकारियों पर बिना किसी कारण के गोली चलाने का आदेश कर दिया जिसमें अनेकों पठान मारे गये

12 नवम्बर 1930–1931 ई0 में लन्दन में प्रथम गोल मेज़ कांफ्रेंस हुई जिसमें भारतीय लोगों का एक दल उसमें शामिल होने के लिए गया उस प्रतिनिधिमण्डल में मौलाना मुहम्मद अली जौहर भी थे उन्होंने शेर की तर दहाड़ते हुए कहा कि हम यहाँ से आज़ादी का परवाना लेकर जाएंगे वरना गुलाम धरती पर वापस नहीं जाऐंगे। इस पर वहां के प्रधानमंत्री ने कहा कि तुम हमसे किस प्रकार की आज़ादी

चाहते हो। उस पर मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने जवाब दिया कि हम ऐसी आज़ादी चाहते हैं कि जैसे तुम हमें जब चाहते हो गिरफ़्तार करके कारावास में डाल देते हो, इसी तरह मैं जब चाहूं तुम्हें बेड़ियाँ पहना कर कैद में डाल दूं,, यही वह मुहम्मद अली जौहर हैं जिनके पास एक बार पैसे नहीं थे मैगज़ीन निकालने के लिए ''कामरेड'' के नाम की अंग्रेज़ी में मासिक मैगज़ीन निकालते थे उसको समय पर प्रकाशित करने के लिए अपने घर का बहुत सा कीमती सामान बेच डाला, दूसरी तरफ उनकी पत्नी बीमार थीं लोगों ने कहा कि इस पैसे से पहले पत्नी का इलाज करा लीजिए मैग़ज़ीन कुछ माह के लिए रोक दीजिए। उन्होने कहा पत्नी को अगर मौत आनी है तो आने दीजिए क्योंकि वह अकेले अपने प्राण देगी लेकिन अगर कामरेड सही समय पर ना निकला तो लाखों लोगों के दिलों में आज़ादी की जो ज्वाला जल रही है वह ढण्डी पड़ जायेगी।

अशफाक़ उल्लाह खान जिनको 9 अगस्त 1925 को ऐतिहासिक काकोरी ट्रेन एकशन के बहाने फैजाबाद की जेल में 27 साल की आयु में फाँसी की सज़ा दे दी गई और उन्होंने आज़ादी की खातिर मुस्कुराते हुए फाँसी के फंदे को चूम लिया मगर अंग्रेज़ सरकार से मॉफी नहीं माँगी।

एक प्रसिद्ध लेखक यंशवंत सिंह कहते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता मुसलमानों के रक्त पर लिखी गई आज़ादी के संग्राम में उनकी भागीदारी उनकी जनसंख्या के छोटे प्रतिशत के अनुपात में कहीं अधिक थी।

वर्तमान में भारतीय मुसलमानों को भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है, उनकी देश भाक्ति पर प्रश्न किये जाते हैं। साम्प्रदायिक दल मुस्लिम इतिहास को बदल कर एक नया इतिहास लिखना चाहते हैं मीडिया के माध्यम से मुसलमानों के विरुद्ध एक ऐसा घृणा और नफ़रत का वातावरण बना दिया गया है कि उनको देखते ही नफ़रती लोगों के अन्दर का राक्षस जाग उठता है और एक भीड़ आती है और उस मुस्लिम व्यक्ति को पीट कर चली जाती है, कभी कभी इन सांप्रदायिक घटनाओं में अनेकों मुसलमानों की जानें चली जाती हैं, क्या हमारे पूर्वजों ने भारत को इसीलिए आज़ाद कराया था? क्या स्वतंत्र भारत का सपना इसीलिए देखा गया था? नहीं, हरगिज़ ऐसा नहीं था यहां के अधिकतर दूसरे समुदाय के लोगों ने भरोसा दिलाया था कि भारत हर भारतीय का है, यहां सब को बराबर का अधिकार प्राप्त होगा भारत के बटवारे में जिन को जाना था वह चले गये परन्तु एक बड़ी संख्या ने यह निर्णय लिया कि हम सब अपने वनत में ही रहेंगे यहां हमारे पूर्वजों की निशानियां कुतुब मीनार, लालक़िला, ताजमहल, अनेकों क़िले, मस्जिद, मदरसे और हमारे पूर्वजों के मज़ारात उनकी ख़ूबसूरत यादगारें हैं, इतिहास उनका गवाह है हम यहां की मिट्टी में पैदा हुए और इसी की गोद में दफ़न होंगे इसलिए जश्न आज़ादी का मतलब है कि हर भारतीय को सम्मान की निगाह से देखा जाए उसके अधिकारों का हनन न हो जो अराजकतत्व हों उनको क़ानून और न्यायालय सज़ा देगा हम कौन होते हैं किसी की जान लेने वाले, इस देश की महानता यहां की अनेकता में एकता को बनाए रखना है इतिहास के साथ छेड़छाड करने वालों को इतिहास कभी मॉफ नहीं करता है। बल्कि वह खुद अपने आपको दोहराता है। यह कुछ उदाहरण हैं जिनमें मुस्लिम समुदाय का जंगे आज़ादी में क्या योगदान रहा, पेश किए हैं जिनसे यह साबित होता है कि भ्रम फैला कर किसी के इतिहास को मिटाया नहीं जा सकता है।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

–मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

नबी (सल्ल0) के जीवन संबंधित सवाल-जवाब

प्रश्न: नबी (सल्ल0) की तारीखे–पैदाइश क्या है?

उत्तर: 12 रबीउल–अव्वल, मुताबिक 22 अप्रैल 571 ई0, सोमवार के दिन।

प्रश्न: नबी (सल्ल0) किस नबी की नस्ल से हैं?

उत्तर: हजरत इस्माईल (अलैहि0) की नस्ल से।

प्रश्न: नबी (सल्ल0) का नाम क्या था?

उत्तर: मुहम्मद और अहमद (सल्ल0)।

प्रश्न: नबी (सल्ल0) का मुहम्मद नाम किसने रखा?

उत्तर: नबी (सल्ल0) के दादा हजरत अब्दुल–मुत्तलिब ने।

प्रश्न: तौरात में नबी (सल्ल0) को किस नाम से याद किया गया है?

उत्तर: फारकलीत (हक और सच्चाई की रूह) के नाम से।

प्रश्न: नबी (सल्ल0) के वालिद (बाप) और वालिदा (माँ) का क्या नाम था ?

उत्तर: वालिद का नाम हज़रत अब्दुल्लाह और वालिदा का नाम आमिना था।

प्रश्न: दादा के इन्तिकाल के बाद नबी (सल्ल0) की परवरिश किसने की ?

उत्तर: नबी (सल्ल0) के चचा हजरत अबू–तालिब ने।

प्रश्न: नबी (सल्ल0) की बहनों और भाइयों के नाम बताइए?

उत्तर: नबी (सल्ल0) अपने माँ–बाप की इकलौती औलाद थे।

प्रश्न: नबी (सल्ल0) के उन चचा का नाम बताइए जो आप (सल्ल0) के दूध शरीक भाई भी थे?

उत्तर: हज़रत हमजा (रज़ि0)।

प्रश्न: लोग नबी (सल्ल0) को किस नाम से पुकारते थे?

उत्तर: सादिक और अमीन (सच्चा और अमानतदार)।

प्रश्न: खान–ए–काबा की तामीर के वक़्त झगड़ा क्यों हुआ और उसे किसने ख़त्म कराया?

उत्तर: हज्रे–असवद को उसकी अस्ल जगह पर रखने के लिए। हर शख़्स और हर कबीला यह चाह रहा था कि वह खुद इस मुबारक पत्थर को अस्ल जगह पर रखे। आखिर में नबी (सल्ल0) के फैसले और आप (सल्ल0) की बताई हुई तदबीर पर झगड़ा ख़त्म हुआ।

प्रश्न: रोजगार के लिए नबी (सल्ल0) ने कौन सा पेशा अपनाया था?

उत्तर: तिजारत (व्यापार)।

प्रश्न: हज़रत खदीजा (रज़ि0) ने नबी (सल्ल0) को निकाह का पैगाम क्यों दिया?

उत्तर: नबी (सल्ल0) की सच्चाई, अमानतदारी और अच्छे अख़्लाक़ से मुतास्सिर हो कर।

प्रश्न: हज़रत खदीजा (रज़ि0) से आपका निकाह कब हुआ?

उत्तर: शाम (सीरिया) से तिजारती सफर की वापसी पर 25 साल की उम्र में (नुवूब्वत से कब्ल)।

प्रश्न: मक्का मुकर्रमा में अकाल के दौरान, जो नबी (सल्ल0) की शादी के बाद पड़ा था, आप (सल्ल0) ने अपने चचा अबू–तालिब की तंगदस्ती दूर करने के लिए क्या किया?

उत्तर: नबी (सल्ल0) ने अपने चचा हज़रत अब्बास (रज़ि0), से जो बहुत अमीर आदमी थे, फरमाया कि ''इस अकाल में चचा अबू–तालिब की मदद करनी चाहिए। अली (रज़ि0) को परवरिश के लिए मैं अपने पास ले आता हूँ और जाफर (रज़ि0) को आप अपने पास रख लें।'' हज़रत अबू–तालिब के ये दोनों बेटे इस तरह परवरिश पाते रहे।

❖❖❖

अमन और शांति के पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्ल०

मौलाना मोहम्मद शोएब नदवी,
जामिया इमदादुल उलूम सरौली प्रतापगढ़

अंतिम नबी हजरत मुहम्मद सल्ल0 की सीरत, चरित्र और आपके समस्त कार्यों में सबसे प्रमुख और उज्ज्वल गुण आपकी ''रहमतुल्लिल आलमीन'' (सारे संसार के लिए दया और करुणा) की विशेषता है। इसका ऐलान स्वयं अल्लाह तआला ने कुरआन में इस प्रकार फरमायाः—

''और हमने आपको समस्त संसारों के लिए (दया) रहमत बनाकर भेजा है।''

(सूरह अल—अंबियाः 107)

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला फरमाता हैः

''यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि आप उनके लिए नरम दिल बने रहे। यदि आप कठोर स्वभाव और सख़्त दिल होते, तो ये लोग आपके पास से बिखर जाते।''

(सूरः आले इमरान— 159)

रसूलुल्लाह सल्ल0 के इस महान गुण का प्रदर्शन आपकी शिक्षाओं, मार्गदर्शन और जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई देता है, यहाँ तक कि युद्ध के मैदान में भी। आपने समस्त मानवता को शिक्षा देते हुए फरमायाः

''रहम करने वालों पर रहमान (अल्लाह) रहम करता है। तुम धरती वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।''

(अबू दाऊद)

आपकी व्यावहारिक जिंदगी में दया, कृपा, सहनशीलता और क्षमा की अनगिनत मिसालें मिलती हैं। लेकिन अपने जानी दुश्मनों और युद्धभूमि में खून के प्यासे शत्रुओं के साथ भी दया और करुणा का व्यवहार करना, उन्हें बद्दुआ देने के बजाय उनके लिए दुआ करना, इतिहास में दुर्लभ है।

गजवा—ए—बद्र के कैदियों को फिदया लेकर छोड़ देना आपकी रहमत का एक महान उदाहरण था। इसी प्रकार मक्का विजय के दिन मक्का वालों के साथ आपका क्षमाशील व्यवहार मानव इतिहास में अपनी मिसाल आप है। जिन लोगों ने तेरह वर्षों तक आप पर अत्याचार किए, आपको अपना वतन छोड़ने पर मजबूर किया, और हिजरत के बाद भी आठ वर्षों तक आपसे युद्ध करते रहे, जब वे पराजित होकर आपके सामने आए तो उन्होंने दया की प्रार्थना की।

उस समय आपने बदला लेने के बजाय फरमायाः

''आज तुम पर कोई पकड़ नहीं। जाओ, तुम सब आजाद हो।'' (सीरत इब्ने हिशाम)

रसूलुल्लाह सल्ल0 की दया, कृपा और क्षमा की कुछ मिसालें प्रसिद्ध विद्वान अल्लामा शिब्ली नोमानी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी पुस्तक सीरतुन्नबी में उल्लेख की हैं।

जिस रात आपने हिजरत फरमाई, उस रात कुरैश के सरदारों ने यह निर्णय कर लिया था कि सुबह होते ही हजरत मुहम्मद सल्ल0 को शहीद कर दिया जाए। इसी उद्देश्य से दुश्मनों का एक दल आपके घर का घेराव किए हुए था। उस समय आपके पास उनसे बदला लेने की कोई बाहरी शक्ति नहीं थी, लेकिन कुछ ही वर्षों बाद ऐसा समय आया कि उन्हीं लोगों में से एक—एक व्यक्ति की जान इस्लाम की शक्ति के सामने थी और उनकी जिंदगी आपके रहम व करम पर निर्भर थी। इसके बावजूद इतिहास गवाह है कि उनमें से किसी को भी उस अपराध के कारण दंडित नहीं किया गया।

हिजरत के समय कुरैश ने आपके सिर की कीमत निर्धारित कर दी थी और घोषणा की थी कि जो व्यक्ति मुहम्मद सल्ल0 को जीवित या मृत पकड़कर लाएगा, उसे सौ ऊँट इनाम में दिए जाएंगे। सुराका उन लोगों में सबसे आगे थे जो इसी उद्देश्य से तेज रफ्तार घोड़े पर सवार होकर, हाथ में भाला लिए आपका पीछा करते हुए पहुँचे थे। लेकिन रास्ते में उन्होंने अल्लाह की कुदरत के चमत्कार देखे और अपनी बुरी

नीयत से तौबा कर ली। उन्होंने आपसे सुरक्षा–पत्र (अमान) माँगा, जिसे आपने लिखवा दिया। आठ वर्ष बाद जब मक्का फतह हुआ तो वे मुसलमान हो गए, और उनके पुराने अपराध का कभी कोई हिसाब नहीं लिया गया।

उमैर बिन वह्ब रसूलुल्लाह सल्ल0 के कट्टर दुश्मनों में से था। गजवा–ए–बद्र में मारे गए लोगों का बदला लेने के लिए सफवान बिन उमय्या ने उसे बड़े इनाम का लालच देकर मदीना भेजा ताकि वह गुप्त रूप से आकर रसूलुल्लाह सल्ल0 की हत्या कर दे। वह जहर में बुझी हुई तलवार लेकर मदीना पहुँचा। हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु ने उसके इरादों को भाँप लिया और उसके साथ कठोर व्यवहार करना चाहा, लेकिन रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उन्हें रोक दिया। आपने उमैर को अपने पास बैठाया और उसके मन की सारी बातें बता दीं। यह सुनकर वह स्तब्ध रह गया। आपने उसे कोई सजा नहीं दी। आपके इस व्यवहार से प्रभावित होकर वह मुसलमान हो गया और मक्का लौटकर इस्लाम का प्रचार करने लगा।

गजवा–ए–उहद में दुश्मनों ने आप पर पत्थर बरसाए, तीर चलाए, तलवारों से वार किए, आपके मुबारक दाँत शहीद हुए और चेहरा लहूलुहान हो गया। लेकिन आपने अपने दुश्मनों के लिए बद्दुआ नहीं की, बल्कि यह दुआ कीः

''ऐ अल्लाह! मेरी कौम को हिदायत दे, क्योंकि ये लोग जानते नहीं हैं।''

वह ताइफ, जिसने इस्लाम की दावत का उत्तर उपहास और अत्याचार से दिया था, जिसने आपको पनाह देने से इंकार कर दिया था और आपके मुबारक पैरों को खून से लथपथ कर दिया था, जब फरिश्ते ने आकर कहा कि यदि आप आदेश दें तो इन लोगों पर पहाड़ उलट दिया जाए, तब भी आपने फरमाया कि शायद इनकी आने वाली नस्लों में ऐसे लोग पैदा हों जो अल्लाह की इबादत करें।

कुछ वर्षों बाद यही ताइफ इस्लाम के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। सहाबा ने अर्ज कियाः ''या रसूलल्लाह! इनके लिए बद्दुआ कीजिए।'' आपने हाथ उठाए। लोगों ने समझा कि अब आप बद्दुआ करेंगे, लेकिन आपकी जुबान से यह शब्द निकलेः

''ऐ अल्लाह! कबीला सकीफ को हिदायत दे और उन्हें मुसलमान बनाकर हमारे पास भेज।''

अंततः आपकी यह दुआ कबूल हुई और ताइफ के लोग मदीना आकर इस्लाम में दाख़िल हो गए।

अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सलूल वह व्यक्ति था जो जीवन भर मुनाफिक (कपटाचारी) बना रहा। उसने हर अवसर पर रसूलुल्लाह सल्ल0 और मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र किए। गजवा–ए–उहद के समय वह अपने साथियों सहित मुस्लिम सेना से अलग हो गया था। हजरत आयशा रजियल्लाहु अन्हा पर लगाए गए झूठे आरोप (वाकिया–ए–इफ़्क) में भी वह सबसे आगे था। इसके बावजूद रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उसके साथ क्षमा और सहनशीलता का व्यवहार किया। जब उसकी मृत्यु हुई तो आपने उसकी मगफ़िरत की दुआ की और उसके जनाजे की नमाज भी पढ़ी।

एक बार किसी व्यक्ति ने आपसे किसी पर बद्दुआ करने का अनुरोध किया तो आप नाराज हो गए और फरमायाः

''मैं दुनिया में लानत भेजने के लिए नहीं, बल्कि रहमत बनाकर भेजा गया हूँ।''

ये तो केवल कुछ उदाहरण हैं। वास्तव में ऐसे सैकड़ों प्रसंग आपकी मुबारक जिंदगी में मिलते हैं। आपकी दया और करुणा केवल मित्रों और शत्रुओं तक सीमित नहीं थी, बल्कि गुलामों, कमजोरों, निर्धनों, वृद्धों, बच्चों, पुरुषों, महिलाओं, पशुओं और पक्षियों तक फैली हुई थी। आपकी रहमत के खजाने से कोई भी वंचित नहीं रहा। न कोई इंसान रहा, न कोई जीव–जंतु, सबने आपकी रहमत का लाभ पाया।

यह आपकी व्यावहारिक जिंदगी के कुछ नमूने थे।

यदि आपकी शिक्षाओं और मार्गदर्शनों का अध्ययन किया जाए तो दया, प्रेम, करुणा और मानवता का एक अथाह समुद्र दिखाई देता है।

❖❖❖

मुजाहिद-ए-आज़ादी बतख मियाँ अंसारी

आलिया ख़ातून

बतख मियाँ अंसारी हिंदुस्तान की तारीख–ए–आजादी का एक ऐसा नाम है जो गुमनामी के अंधेरे में डूबा हुआ है। कभी कभी जब आजादी की गुमनाम हस्तियों का जिक्र होता है तो बतख मियाँ अंसारी को भी याद कर लिया जाता है। लेकिन उन्होंने मुल्क की आज़ादी के लिए जो किया है उसे कतई तौर पर फरामोश नहीं किया जा सकता।

बतख मियाँ अंसारी का असल नाम बख्त मियाँ अंसारी है, मगर तारीख में उनका नाम बतख मियाँ अंसारी हो गया है। वे पूर्वी चंपारण के सेसवा गाँव के रहने वाले थे। 25 जून 1929 को पैदा हुए और आजाद हिंदुस्तान की हवाओं में साँस लेते हुए 1952 में अपने मालिक– ए–हकीकी से जा मिले।

बतख मियाँ अंसारी कहने को अँग्रेजों के खानसामां थे। मगर वतन की मुहब्बत से उनका दिल लबरेज था। उन्होंने महात्मा गाँधी की जान बचाई थी यही उनका बड़ा कारनामा है।

बहरहाल बतख मियाँ अंसारी ने गांधी जी की जिंदगी किस तरह बचाई? ये एक दिलचस्प वाकया है और वो यूँ है कि चंपारण में नील की खेती बड़े पैमाने पर होती थी। अँग्रेज़ किसानों से बेगार कराते थे और उनके साथ ज़्यादती करते और बहुत सख़्ती से पेश आते थे। हालात ये थे कि किसानों पर जुल्म के पहाड़ तोड़े जा रहे थे, जुल्म की इंतिहा हो गई थी। किसान बे–इंतिहा परेशान थे। ऐसे में वहाँ के किसानों और सम्मानित लोगों ने गाँधी जी को चंपारण बुलाने का प्रोग्राम बनाया चुनांचे शैख गुलाब, राज कुमार शुक्ल, और शीतल राय और दीगर मुजाहिदीन आजादी के बेहद इसरार और ज़िद करने पर गाँधी जी अप्रैल 1917 में चंपारण पहुँचे।

जब इस की खबर उस समय के नील फैक्ट्री मैनेजरों के लीडर अरुण को मिली तो वह तिलमिला उठा और उसने गाँधी जी को ही सफह–ए–हस्ती से मिटाने के लिए एक बहुत ही खतरनाक और शातिराना मंसूबा बनाया। और वो ये था कि गाँधी जी के खाने में ज़हर दे कर उन्हें मौत की नींद सुला दिया जाए। अपने इस घटिया मकसद की तकमील के लिए अरुण ने बहुत ही चालाकी से गाँधी जी को रात के खाने पर बुलाया और फिर अपने खानसामां बतख मियाँ अंसारी को बताया कि किस तरह ज़हर मिला हुआ शरबत गाँधी जी को पिलाना है। अपनी छोटी सी कमाई के जरिए अपने बाल बच्चों की परवरिश करने वाले बतख मियाँ अंसारी गाँधी जी को मारने का मंसूबा जान कर अंदर ही अंदर काँप रहे थे और इस सोच में पड़ गए कि किस तरह इस मुसीबत को टाला जाए और गाँधी जी की जान बचाई जाए। आखरिकार वो ट्रे में ज़हर मिला हुआ दूध से तैयार शरबत ले कर गांधी जी के पास तो गये लेकिन उन्हें पीने नहीं दिया। जब बतख मियाँ अंसारी की आँखों से गाँधी जी की आँखें मिलीं तो बतख मियाँ अंसारी की आँखें नम हो गईं और उन्होंने डॉ0 राजेंद्र प्रसाद, पूर्व राष्ट्रपति, और दीगर साथियों के सामने ही जो गाँधी जी के साथ गए थे, पूरी हकीकत खोल कर रख दी।

गाँधी जी और उनके सहयोगी तो वहाँ से चले गए लेकिन बतख मियाँ अंसारी को बाद में अरुण के गुस्से और इंतिकाम का निशाना बनना पड़ा। उन्हें इसकी पादाश में बेरहमी से पीटा गया और जेल की सलाखों के पीछे डाल दिया गया। अँग्रेज़ी जुल्म की इंतिहा कुछ इस हद तक बढ़ी कि जिस छोटे से घर में उनका खानदान रहता था उसे भी ध्वस्त कर दिया गया।

हिंदुस्तान को जालिम अंग्रेजों की गुलामी से आजादी

आसानी से नहीं मिली। बल्कि इसके लिए बड़ी जद्दोजहद की गई। मुख्तलिफ तहरीकें चलाई गईं, जिनमें से कुछ कामयाब हुईं और कुछ नाकाम। और कुछ जंग–ए–आजादी की तहरीक में दीगर तहरीकों का पेश–खैमा (भूमिका) साबित हुईं। जंग–ए–आजादी की तारीख इंकलाबात और तहरीकों से भरी पड़ी है। 1857 की जंग को हिंदुस्तान की आजादी में अव्वलियत का दर्जा हासिल है।

महात्मा गांधी को हिंदुस्तान की आजादी का हकीकी रहनुमा तसव्वुर किया जाता है और उनका नाम आते ही अंग्रेजो! भारत छोड़ो, और असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और इसी तरह की दीगर तहरीकों की याद ताजा हो जाती है। लेकिन आपको मालूम है कि इन सब तहरीकों से पहले 1917 में बिहार के चंपारण में नील की खेती करने वाले किसानों पर जुल्म के खिलाफ तहरीक चलाई गई जिसे ''चंपारण सत्याग्रह'' का नाम दिया गया। इस तहरीक में कामयाबी मिली जिससे गांधी जी को और तहरीकें चलाने की प्रेरणा मिली। और इसी तहरीक के बाद गांधी जी को महात्मा का खिताब मिला। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि इसी चंपारण सत्याग्रह से पहले गांधी जी को जान से मारने का मंसूबा बनाया गया था। जिसे देश प्रेम में लीन बतख मियां अंसारी ने नाकाम बना दिया था।

जी हां! अगर बतख मियाँ अंसारी न होते तो न गाँधी जी महात्मा बन पाते, न ही चंपारण सत्याग्रह होता और न ही वह कामयाबियाँ मिलतीं जो गांधी जी की क़यादत में अनेकों तहरीकों से हासिल हुई।

काबिले गौर बात ये है कि अगर अप्रैल 1917 में जहर का ग्लास पीने से गांधी जी को बतख मियां अंसारी ने न बचाया होता तो हिंदुस्तान की तारीख क्या होती। ये सोच कर दिल घबरा जाता है कि क्या हिंदुस्तान 15 अगस्त 1947 को आजाद नहीं हो पाता। क्या गुलामी की जंजीरें मजीद कई सालों तक बंधी रहतीं। सज्जनों! बतख मियाँ अंसारी ने जो कारनामा अंजाम दिया है, उसे हम फरामोश नहीं कर सकते। हम उन्हें सलाम करते हैं, उनके देश प्रेम को सलाम करते हैं और उनकी कुर्बानियों को सलाम करते हैं।

❖❖❖

पृष्ठ .....22... का शेष

अहमद शाह के एक फरमान से मालूम होता है कि उसके ख़र्च के लिए शाही खज़ाने से वजीफा मुकर्रर था।

गोलकुंडा, बीजापुर और अहमदनगर के सुल्तानों ने उदारतापूर्वक सभी फौजी और दीवानी विभागों को हिन्दुओं के लिए खोल दिया था। शिवाजी के पिता शाहूजी महाराज बीजापुर और अहमदनगर दोनों रियासतों में उच्च सैनिक अधिकारी के पद पर नियुक्त थे।

सुल्तान शाह हुसैन बंगाल में बंगला भाषा के बड़े समर्थक थे उन्होंने सरकारी खर्च पर महाभारत, रामायण, उपनिषद जैसी संस्कृत की धार्मिक पुस्तकों का बंगला में अनुवाद कराया था। बंगाल में 12 बड़े बड़े जागीरदार नियुक्त किए गए थे जो अपने क्षेत्र की व्यवस्था में पूरी तरह आजाद थे उन में से एक को छोड़कर बाकी सभी हिन्दू धर्म से थे।

मुस्लिम शासकों की उदारता और बिना भेदभाव की नीतियों के अनेक प्रमाण इतिहास के पन्नों में महफूज हैं। वे केवल शासक थे, धर्म प्रचारक नहीं थे, उनको हमेशा अपने शासन के विस्तार की चिंता रहती थी जो बिना हिन्दुओं को साथ लिए संभव नहीं थी।

आजकल मुस्लिम शासकों पर एक आरोप यह भी लगाया जा रहा है कि उन्होंने अपने शासनकाल में हजारों हजार हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा था। यह आरोप कितना हास्यास्पद/मजहकाखेज और निराधार है तनिक भी ध्यान दें तो साफ़ समझ में आता है। भारत में मुस्लिम शासनकाल 800 वर्ष से अधिक रहा यदि उन्होंने वास्तव में हिन्दुओं का नरसंहार किया होता और जबरन उनका धर्म परिवर्तन कराया होता तो क्या आज भारत में मुसलमान केवल 15 प्रतिशत होते।

❖❖❖

इसराइल द्वारा जारी नरसंहार पर दुनिया की चुप्पी:
इंसानियत की तबाही का संकेत- एक विशलेषण

नौशाद खान नदवी

गाजा में इजरायली नरसंहार को 2 वर्ष 9 महीने से ज़्यादा का वक़्त बीत चुका है, लेकिन युद्धविराम समझौतों और अंतर्राष्ट्रीय दबावों के बावजूद इजराइल की ओर से लगातार बमबारी जारी है। वह सरज़मीन जो कभी जैतून के बागों से महकती और बच्चों की किलकारियों से चहकती थी, आज एक सामूहिक कब्रगाह में तब्दील हो चुकी है। यह आधुनिक इतिहास की सबसे भयावह और सोची–समझी नस्लकुशी (*Genocide*) है। इससे भी ज़्यादा खौफ़नाक है इस सदी की सबसे बड़ी मुंसिफ– दुनिया की आपराधिक खामोशी।

इस तबाही की भयावहता का अंदाजा किसी अंदाजे से नहीं, बल्कि दुनिया के सबसे प्रामाणिक आँकड़ों से लगाया जा सकता है, जिससे यह साबित होता है कि किस तरह फलस्तीनियों की खुद की ज़मीन उनके लिए नर्क बना दी जा रही है।

''गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय (MOH), संयुक्त राष्ट्र (UN), और *UNRWA* (*United Nations Relief and Works Agency for Palestine Refugees in the Near East*) की आधिकारिक रिपोर्टों के अनुसार, गाजा में अब तक 73,221 से अधिक मासूमों की जान जा चुकी है और 1,73,000 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। इस जुल्म की कड़वी सच्चाई यह है कि मारे गए लोगों में सबसे बड़ी संख्या आम नागरिकों की है, जिसमें 21,500 से अधिक बच्चे और 38,000 से अधिक महिलाएं शामिल हैं। इंसानियत को शर्मसार करने वाले इस हमले में 1,700 से अधिक मेडिकल स्टाफ, सच को ज़िन्दा रखने वाले 270 से अधिक पत्रकार (इनकी तो टारगेट किलिंग हुई), और 391 से अधिक *UNRWA* के राहत कार्यकर्ताओं को भी मौत के घाट उतार दिया गया।''

यह सरकारी आँकड़ा तो सिर्फ एक सिरा है असल खौफ तो मलबे के नीचे दफ्न है। प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नल ''द लांसेट ग्लोबल हेल्थ'' (*The Lancet Global Health*) के स्वतंत्र वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, केवल बमबारी से होने वाली हिंसक मौतों का वास्तविक आंकड़ा 75,200 को पार कर चुका है। इसके अलावा, 10,000 से अधिक लोग आज भी मलबे के नीचे दबे हुए हैं। यही नहीं, दवाओं की किल्लत, भुखमरी (*Starvation*), और साफ पानी न मिलने के कारण 16,300 से अधिक अप्रत्यक्ष मौतें हो चुकी हैं। अल जजीरा (Al Jazeer) के मुताबिक, गाजा में होने वाली मौतों में हर 1 लड़ाके के मुकाबले 5 से 8 आम नागरिक मारे जा रहे हैं, यानी मरने वालों में 83% से ज़्यादा बेकसूर लोग हैं।

जस्टिस एस. मुरलीधर की रिपोर्ट: आधुनिक इतिहास का सबसे क्रूर दस्तावेज:–

यह सिर्फ हमारा भावुक दावा नहीं है, बल्कि दुनिया की सबसे बड़ी पंचायत संयुक्त राष्ट्र (UN) के स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय जांच आयोग की वह दहला देने वाली सच्चाई है जिसे कोई झुठला नहीं सकता। भारत के पूर्व प्रतिष्ठित न्यायाधीश श्रीनिवासन मुरलीधर की अध्यक्षता में तैयार की गई 94 पृष्ठों की विस्तृत जांच रिपोर्ट ने इजराइल के दावों के परखच्चे उड़ा दिए हैं।

जस्टिस मुरलीधर ने अपनी इस ऐतिहासिक और आधिकारिक रिपोर्ट में बहुत साफ और बेबाक शब्दों में स्पष्ट किया है कि गाजा में कम से कम 20,179 फिलिस्तीनी मासूम बच्चों की बेरहमी से हत्या की गई। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में पुख्ता साक्ष्यों (*Evidences*) के साथ सीधे तौर पर इजराइल को कटघरे में खड़ा करते हुए कहा है:

''गाजा में बच्चों को किसी भूल के तहत नहीं, बल्कि एक सोची–समझी और सुनियोजित रणनीति के तहत ''जानबूझ कर निशाना'' बनाया गया है। यह अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून का सबसे गंभीर और अक्षम्य उल्लंघन है।''

रिपोर्ट के ये 94 पन्ने गाजा के उन स्कूलों, अस्पतालों और रिहाइशी इलाकों की चीखों से भरे हैं जिन्हें बमों से उड़ा दिया गया। बच्चों की यह सुनियोजित नस्लकुशी यह साबित करने के लिए काफी है कि यह जंग किसी लड़ाके से नहीं, बल्कि फिलिस्तीन के भविष्य को हमेशा के लिए दफन करने के लिए लड़ी जा रही है।

अंतर्राष्ट्रीय मुआहदों का जनाजा और मानवाधिकार का ढोंगः–

जिन मानवाधिकारों और ''मुआहदों'' का ढिंढोरा पूरी दुनिया पीटती है, आज गाजा के मलबे के नीचे उनका भी जनाजा निकल चुका है। युद्ध के भी कुछ अंतरराष्ट्रीय नियम होते हैं (जबकि ये युद्ध नहीं है बल्कि एकतरफा नरसंहार है)। जिनेवा कन्वेंशन (*Geneva Conventions*) के मुताबिक अस्पतालों, स्कूलों, शरणार्थी शिविरों और निहत्थे नागरिकों पर हमला करना सीधा ''युद्ध अपराध'' (*War Crime*) है। लेकिन आज गाजा में इन सभी नियमों को खुलेआम पैरों तले रौंदा जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (*UNSC*) में पास हुए ''युद्धविराम'' (*Cease fire*) के प्रस्ताव हों, या अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (*ICJ*) द्वारा नरसंहार रोकने के सख्त आदेश सब केवल रद्दी के टुकड़े साबित हुए हैं। वीटो पावर के नशे में चूर कुछ मुल्कों ने यह साबित कर दिया है कि जब बात उनके हितों की आती है, तो दुनिया का कोई भी मुआहदा उनके लिए मायने नहीं रखता।

मुस्लिम देशः इजराइल की कठपुतलीः–

इस पूरे मंजरनामे में सबसे दर्दनाक और शर्मनाक भूमिका मुस्लिम देशों की रही है। ''किबला–ए–अव्वल'' (बैतुल मुक़द्दस) सदियों से जंगों की चपेट में है, उसकी हुरमत तार–तार हो रही है, लेकिन तथाकथित इस्लामिक मुल्क अपने तेल के कुओं, आलीशान इमारतों, भोग–विलास और भू–राजनीतिक फायदों के सौदे में मसरूफ़ हैं। ''ह्यूमन राइट्स वॉच'' जैसी संस्थाओं ने साफ़ किया है कि गाजा में ''भुखमरी को युद्ध के हथियार के रूप में'' इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके बावजूद, सीमा पर सटे बड़े मुस्लिम और अरब देश मानवीय सहायता के रास्तों को पूरी तरह खुलवाने या हमलावरों पर कोई बड़ा आर्थिक व कूटनीतिक दबाव बनाने में नाकाम रहे हैं। यह खामोशी सिर्फ बेगैरती नहीं, बल्कि उस दीनी और नैतिक जिम्मेदारी से पूरी तरह मुकर जाना है, जो मजलूमों की मदद के लिए फर्ज की गई थी।

दुनिया की यह खामोशी खुद दुनिया के लिए चेतावनी हैः–

हम और आप क्या कर रहे हैं? हम अपने एयर कंडीशन कमरों में बैठकर सोशल मीडिया पर दो–चार निंदा के शब्द लिख देते हैं, शेयर कर देते हैं, ज़्यादा से ज़्यादा एक दुःख भरा कमेंट कर देते हैं, याद रखिये, डिजिटल पन्नों पर बहाए गए ये घड़ियाली आंसू गाजा की धधकती आग को बुझा नहीं सकते।

अगर आज दुनिया गाजा को मलबे में तब्दील होता देखती रही, तो आने वाला कल भयावह होगा। जब अत्याचारियों को, जालिमों को और कानून की धज्जियां उड़ाने वालों को खुली छूट मिल जाती है, और उनसे जवाबदेही का डर खत्म हो जाता है, तो पूरी दुनिया एक जंगल में बदल जाती है। जहाँ आज गाजा का शोषण हो रहा है, कल यही ताकतें हमारे हक़ और हमारी आजादी पर भी डाका डालेंगी।

निष्कर्ष यह है कि गाजा की महिलाओं की चीखें और मलबे से निकलती बच्चों की छोटी– छोटी लाशें आज हर जिंदा इंसान के जमीर को झकझोर रही हैं। यह वक्त मर्सिया पढ़ने का नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर एकजुट होकर इस जुल्म के खिलाफ ठोस कदम उठाने का है। अगर आज भी दुनिया की आंखें नहीं खुलीं, तो इतिहास हमें इंसान नहीं, बल्कि एक बुजदिल दौर का तमाशबीन कहेगा।

❖❖❖

हजरत आदम अलैहिस्सलाम की विशेषताएं कुरआन की रोशनी में

अब्दुल कवी फ़ारूक़ी

अल्लाह तबारक व तआला ने इस रू–ए–ज़मीन पर बेशुमार नबियों को भेजा है, जिसमें सबसे पहले नबी हजरत आदम अलैहिस्सलाम हैं। कुरआन–ए–करीम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जिक्र बहुत शानदार अंदाज से फरमाया है। कुरआन हज़रत आदम की पैदाइश का वाकिया जिक्र कर रहा है कि जब आपके रब ने फरिश्तों को बतलाया कि ''मैं ज़मीन में खलीफा (प्रतिनिधि) बनाने जा रहा हूँ।'' तो वो फौरन कहने लगे, ''क्या आप ऐसी मखलूक (सृष्टि) पैदा करेंगे जो ज़मीन में फसाद (अशांति) बरपा करेगी और रक्तपात करेगी? जबकि हम आपकी तस्बीह के साथ पवित्रता में मशगूल रहते हैं।'' अल्लाह ने फरमाया, ''मैं वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।'' फिर अल्लाह तआला आगे फरमाता है, ''जब हमने हजरत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फरमाया और फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो वो सब सज्दे में गिर पड़े, मगर इब्लीस (शैतान) ने इंकार कर दिया। उसने अपने आप को बड़ा समझा, इस तरह वो काफिर (अवज्ञाकारी) हो गया।

जन्नत से निकलने का वाक़िया:–

फिर हमने आदम से कहा कि तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में जहाँ चाहो रहो और दोनों मजे से खाओ, लेकिन उस पेड़ के पास न जाना वरना जालिमों में हो जाओगे। लेकिन शैतान ने उनको विचलित कर दिया और जन्नत से निकलवा दिया।फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द सीख लिए और तौबा की, तो अल्लाह ने उनकी तौबा कबूल फरमाई। बेशक वह बहुत तौबा कबूल करने वाला और मेहरबान है। अल्लाह तआला इसी बात को आगे बढ़ाते हुए फरमाता है कि, ''हम इससे पहले आदम को ताकीदी हुक्म दे चुके थे मगर वह भूल गए और हमने उनमें मजबूत इरादा नहीं पाया।'' हमने कहा, ''ऐ आदम! यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, कहीं यह तुम्हें जन्नत से न निकलवा दे कि तुम मुसीबत में फँस जाओ।

लेकिन शैतान ने उन्हें बहकाया कि ऐ आदम! क्या मैं तुझे एक पेड़ न बता दूं जिससे तू हमेशा फायदा उठाएगा और कभी खत्म न होने वाली बादशाहत नसीब होगी? इस तरह वो दोनों वर्जित पेड़ खा बैठे, नतीजा ये हुआ कि आपस में एक दूसरे की शर्मगाहें नज़र आने लगीं तो वो जन्नत के पत्तों से अपने आप को ढांपने लगे। गोया आदम ने अपने रब की नाफरमानी की और राह–ए–रास्त (सीधे रास्ते) से भटक गए। मगर अल्लाह तआला ने उन्हें नबूवत के लिए मुंतखब (चयनित) फरमाया और तौबा कुबूल करके उनको राह–ए–रास्त (सीधे रास्ते) पर ले आया।

एक नुक्ता, दो अहम बातें! जैसा कि हमें और आपको अच्छी तरह से इस बात का इल्म है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सब से पहले पैगम्बर हैं। मगर यहाँ जिस बात की तरफ इशारा करना है, वो ये है कि शैतान ने उन पर भी अपना काम करके और थोड़े समय के लिए भूल में डाल दिया था तो क्या हमें और आप को वो ऐसे ही छोड़ देगा? क्या उसने अल्लाह से वादा नहीं किया है कि हम आप के बंदो को गलत रास्ते पर ले जाने की कोशिश करेंगे? क्या वो ज़्यादा इंसानों को अपने धोखा में नहीं डालता है अगर ये बात है तो फिर हम को उसके जाल से बचना चाहिए हमें कोई काम करने से पहले खूब सोचना चाहिए!

दूसरी बात क्या हज़रत आदम को अल्लाह ने जन्नत से नहीं निकाला था उनकी न फरमानी की वजह से, मगर वो नबियों की लिस्ट में कैसे आगये और ये कि वो पहले नबी कैसे बन गये? अगर सोचें तो उनको इतनी कामयाबी सिर्फ उनकी दुआ की वजह से मिली है और अपने रब के सामने अपनी ग़लती मानने की वजह से। शर्मिंदगी के आंसू निकालने पर कामयाबी मिलती है हक़ीक़त में इंसान को ग़लती का पुत्ला कहा गया है। अगर हमसे ग़लती हुई तो

शेष पृष्ठ ....40....पर

स्वस्थ जीवन का इस्लामी दृष्टिकोण:

आधुनिक विज्ञान और इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में

मुहम्मद जुबैर अहमद नदवी

आज का इंसान पहले से कहीं अधिक सुविधाओं से संपन्न है, लेकिन इसके बावजूद पहले से अधिक बीमारियों का शिकार है। मधुमेह (डायबिटीज), उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मोटापा, तनाव, अवसाद (डिप्रेशन) और अनिद्रा जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। सामान्यतः हम इन बीमारियों का कारण केवल गलत खान—पान या शारीरिक कमजोरी को मानते हैं, जबकि वास्तविकता इससे कहीं अधिक व्यापक है।

इस्लाम हमें सिखाता है कि इंसान केवल शरीर नहीं है, बल्कि शरीर, मन और आत्मा का समन्वित रूप है। जब ये तीनों संतुलित रहते हैं, तभी वास्तविक स्वास्थ्य प्राप्त होता है। जैसे ही यह संतुलन बिगड़ता है, बीमारियाँ जन्म लेने लगती हैं।

स्वास्थ्य केवल शरीर का नाम नहीं:—

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी अब इस बात को स्वीकार कर रहा है कि मानसिक और आध्यात्मिक स्थिति का शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है। लगातार तनाव, चिंता, ईर्ष्या, क्रोध, स्वार्थ और नकारात्मक सोच शरीर में सूजन (Inflammation) पैदा करती है, जो आगे चलकर मधुमेह, हृदय रोग और अन्य गंभीर बीमारियों का कारण बनती है।

इसी प्रकार आंतों (Gut Health) का स्वास्थ्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि आंतों की स्थिति हमारे मस्तिष्क, स्मरण शक्ति, मनोभाव और व्यवहार को प्रभावित करती है।

प्रकृति से दूरी, बीमारियों की बड़ी वजह:—

आज का मनुष्य प्राकृतिक जीवनशैली से दूर होता जा रहा है। प्रसंस्कृत (Processed) भोजन, अत्यधिक चीनी, फास्ट फूड, देर रात तक जागना, मोबाइल और सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग, शारीरिक श्रम की कमी और अनियमित दिनचर्या हमारी सेहत को लगातार नुकसान पहुँचा रहे हैं। कुरआन हमें पवित्र (तय्यिब) और स्वच्छ भोजन खाने तथा संयम अपनाने की शिक्षा देता है।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया:—

''इंसान अपने पेट से बुरा कोई बर्तन नहीं भरता।''

यह हदीस आज की असंतुलित खान—पान की आदतों पर पूरी तरह लागू होती है।

अधिक भोजन और कम गतिविधि:—

मोटापा केवल शरीर का बढ़ा हुआ वजन नहीं है, बल्कि शरीर के अंदर अंगों के चारों ओर जमा होने वाली खतरनाक चर्बी का संकेत भी है। यही चर्बी आगे चलकर फैटी लिवर, मधुमेह, हृदय रोग और कई प्रकार के कैंसर का कारण बन सकती है।

इसलिए आवश्यक है कि:—

- o भूख लगने पर ही भोजन करें।
- o पेट पूरी तरह भरने से पहले भोजन रोक दें।
- o रात में देर से भोजन करने से बचें।
- o प्रतिदिन शारीरिक व्यायाम या पैदल चलने की आदत बनाएँ।

रोजा प्राकृतिक उपचार:—

आज पूरी दुनिया इंटरमिटेंट फास्टिंग (Intermittent Fasting) के लाभों पर शोध कर रही है, जबकि इस्लाम ने चौदह सौ वर्ष पहले ही रमजान के रोजों तथा सोमवार और गुरुवार के रोजों की शिक्षा दे दी थी।

रोजा:—

- वजन नियंत्रित करता है।
- इंसुलिन की कार्यक्षमता बढ़ाता है।
- शरीर की सूजन कम करता है।
- पाचन तंत्र को आराम देता है।
- मानसिक एकाग्रता बढ़ाता है।
- आध्यात्मिक शक्ति को मजबूत करता है।

आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य:—

आध्यात्मिक कमजोरी सबसे पहले इंसान के आत्म—संयम

(Self Control) को कमजोर करती है। जब आत्म–संयम समाप्त होने लगता है तो व्यक्ति आवश्यकता से अधिक खाने लगता है, क्रोध और ईर्ष्या का शिकार होता है तथा मानसिक समस्याएँ बढ़ने लगती हैं।

नमाज, दुआ, तौबा, तिलावत, तहज्जुद और अल्लाह पर भरोसा (तवक्कुल) इंसान के दिल को सुकून देते हैं। यही सुकून मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की बुनियाद बनता है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः–

''सुन लो! अल्लाह की याद ही से दिलों को सुकून मिलता है।''

(सूरह अर–रअदः 28)

अच्छी नींद भी इबादत का हिस्साः–

इस्लाम ने इशा की नमाज के बाद शीघ्र सोने और सुबह जल्दी उठने की शिक्षा दी है।

आधुनिक विज्ञान भी मानता है कि पर्याप्त और समय पर नींदः–

○ हार्मोन को संतुलित रखती है।
○ तनाव कम करती है।
○ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है।
○ मधुमेह और हृदय रोग के खतरे को कम करती है।

स्वस्थ जीवन के लिए इस्लामी मार्गदर्शनः–

यदि हम स्वस्थ रहना चाहते हैं तो हमेंः–

○ पवित्र और प्राकृतिक भोजन अपनाना चाहिए।
○ अधिक चीनी और प्रसंस्कृत भोजन से बचना चाहिए।
○ संयमपूर्वक भोजन करना चाहिए।
○ नियमित रोजे रखने की आदत डालनी चाहिए।
○ समय पर सोना और समय पर जागना चाहिए।
○ प्रतिदिन व्यायाम या पैदल चलना चाहिए।
○ नमाज़, जिक्र, दुआ और कुरआन की तिलावत को जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।
○ अल्लाह पर पूर्ण भरोसा रखना चाहिए।
○ क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष और नकारात्मक सोच से बचना चाहिए।

निष्कर्षः–

इस्लाम केवल इबादत का धर्म नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन–व्यवस्था है। यह शरीर, मन और आत्मा तीनों की सुरक्षा और संतुलन की शिक्षा देता है। आज जिसे आधुनिक विज्ञान ''लाइफस्टाइल मेडिसिन'' कहता है, उसकी बुनियाद इस्लाम ने सदियों पहले रख दी थी।

यदि हम प्रकृति की ओर लौटें, पैगम्बर मुहम्मद सल्ल0 की सुन्नत को अपने जीवन में अपनाएँ, संतुलित भोजन करें, नियमित रोजे रखें, पर्याप्त नींद लें, शारीरिक गतिविधि बढ़ाएँ और अल्लाह पर भरोसा रखें, तो न केवल अनेक बीमारियों से बच सकते हैं बल्कि एक स्वस्थ, संतुलित और सुखी जीवन भी जी सकते हैं।

''अल्लाह की ओर लौटें, सुन्नत की ओर लौटें और प्रकृति की ओर लौटें, यही स्वस्थ और सफल जीवन का वास्तविक मार्ग है।''

❖❖❖

पृष्ठ .....38... का शेष

जान लो जो अल्लाह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को मॉफ़ कर सकता है वो हम को भी माफ कर सकता है!

आदम अलैहिस्सलाम की कुछ विशेषताएं जो कुरआन मजीद में बताई गई हैंः–

''खलीफतुल्लाह (अल्लाह का नायब) कुरआन ने आप को ज़मीन पर अल्लाह का खलीफा करार दिया है।''

(सूरः अल–बकरह 30)

इल्म–ए–अस्मा (नामो का ज्ञान)ः–

अल्लाह ने आप को तमाम चीजों के नाम सिखाए।

मिट्टी से रचना (बगैर माँ बाप)ः–

आप को मिट्टी से पैदा किया गया है और फिर जान डाली गई।

रुतबा और फजीलत (दर्जा और श्रेष्ठता)ः–

अल्लाह ने फरिश्तों को आप के सामने सज्दा–ए–ताजीमी (सम्मान का सज्दा) करने का हुक्म दिया। गलती पर तौबा करने वाले शैतान के बहकावे में आकर दरख़्त (पेड़) का फल खाने के बाद आप ने फौरन तौबा की जिसे अल्लाह ने कबूल फरमाया।

(सूरः अल–अअराफः 23)

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

यूएई में सबसे बड़े यात्री रेल नेटवर्क की शुरुआत, दो स्टेशनों के बीच सेवा शुरू:—

अबू धाबी (डब्ल्यूएएम): संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने अपने राष्ट्रीय यात्री रेल नेटवर्क की शुरुआत कर दी है। पहले चरण में अबू धाबी और दुबई के बीच यात्री ट्रेन सेवा शुरू की गई है।

अबू धाबी के युवराज शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने इस सेवा का उद्घाटन किया। अधिकारियों के अनुसार, यह ट्रेन अबू धाबी और दुबई के बीच लगभग 30 मिनट में यात्रा पूरी करेगी।

यह ट्रेन प्रतिदिन लगभग 55 यात्राएँ करेगी। शुरुआत में प्रीमियम और इकोनॉमी क्लास की सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।

इस परियोजना की अनुमानित लागत लगभग 30 अरब दिरहम बताई गई है। यह रेल नेटवर्क पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे व्यापार, पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा तथा लोगों के लिए यात्रा अधिक तेज, सुरक्षित और सुविधाजनक बनेगी।

पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण नहीं:—

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि पासपोर्ट सिर्फ यात्रा और पहचान का दस्तावेज है, न कि भारतीय नागरिकता का अंतिम प्रमाण। मंत्रालय ने हालांकि यह भी कहा कि पासपोर्ट सिर्फ भारतीय नागरिकों को जारी किया जाता है, लेकिन नागरिकता का निर्धारण संबंधित कानूनों और अन्य वैधानिक दस्तावेजों के आधार पर किया जाता है।

पासपोर्ट सेवा दिवस पर मंत्रालय की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है, जब विभिन्न मंचों पर नागरिकता के प्रमाण के रूप में पासपोर्ट को लेकर भ्रम की स्थिति देखी जाती रही है। मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि पासपोर्ट अंतर्राष्ट्रीय यात्रा के लिए जारी किया जाने वाला दस्तावेज है।

47 देशों में वीजा ऑन अराइवल:—

भारतीयों को 27 देशों में वीजा—फ्री एंट्री की सुविधा है। वहीं, 47 देशों में वीजा ऑन अराइवल और 66 देशों में ई—वीजा की सुविधा भी उपलब्ध है।

10% भारतीयों के पास ही पासपोर्ट:—

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि देश की कुल आबादी में देखें तो लगभग 10% भारतीयों के पास पासपोर्ट है। अब तक 1.47 करोड़ चिप—युक्त ई—पासपोर्ट जारी किए जा चुके है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का निष्कर्ष: 92% लोग कैंसर से प्रभावित होंगे:—

विश्व स्वास्थ्य संगठन और अंतर्राष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान एजेंसी के नवीनतम वैश्विक कैंसर रिपोर्ट 2026 ने दुनिया को गंभीर खतरे की चेतावनी देते हुए कहा है कि दुनिया की 92% आबादी किसी न किसी स्तर पर कैंसर से प्रभावित होगी और हर 5 में से 1 व्यक्ति अपने जीवनकाल में कैंसर का शिकार होगा।

रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनिया भर में कैंसर के सालाना 2 करोड़ 6 लाख नए मामले सामने आ रहे हैं, जबकि मौतों की संख्या 1 करोड़ सालाना तक पहुंच चुकी है। रोजाना 26 हज़ार से ज़्यादा ज़िंदगियां कैंसर और हृदय रोगों के कारण ख़त्म हो रही हैं। कैंसर के बाद हृदय रोग दूसरी सबसे बड़ी जानलेवा बीमारी बन चुका है।

2050 तक कैंसर के मामले 3 करोड़ 50 लाख तक पहुंचने का अनुमान है। यही हाल रहा तो आने वाले दशकों में यह बीमारी एक वैश्विक महामारी का रूप ले सकती है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوة العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ـ ٹیگورمارگ
لکھنؤ ـ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक: **22/07/2026** तारीخ ________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकजा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के कि़लों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT	ATIYA	BUILDING
NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 25 - Issue 06

Whatsapp & Call 9559844716
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC & RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3

DESIGNED BY : SAAD HAMDAM # 9860448783